रबड़ समाचार

अंक - 127

जुलाई - सितंबर 2020

सरफरोशी की तमन्ना

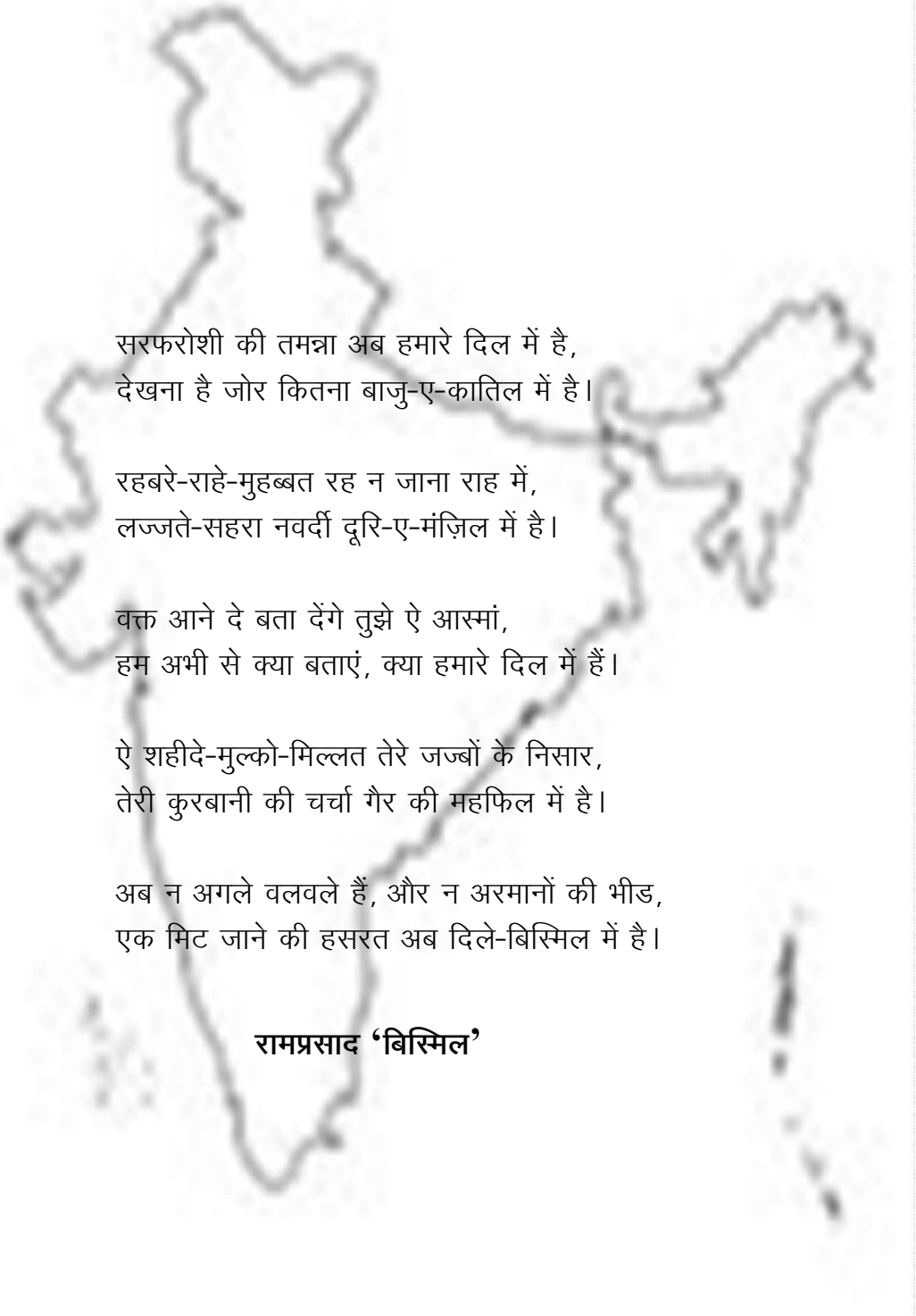

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है,
देखना है जोर कितना बाजु-ए-कातिल में है।

रहबरे-राहे-मुहब्बत रह न जाना राह में,
लज्जते-सहरा नवर्दी दूरि-ए-मंज़िल में है।

वक्त आने दे बता देंगे तुझे ऐ आस्मां,
हम अभी से क्या बताएं, क्या हमारे दिल में हैं।

ऐ शहीदे-मुल्को-मिल्लत तेरे जज्बों के निसार,
तेरी कुरबानी की चर्चा गैर की महफिल में है।

अब न अगले वलवले हैं, और न अरमानों की भीड,
एक मिट जाने की हसरत अब दिले-बिस्मिल में है।

रामप्रसाद 'बिस्मिल'

रबड़ बोर्ड

(वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार)

कोट्टयम - 686 002, केरल

पी बी नं.1122

दूरभाष : (0481) 2301231

फैक्स : 91 481 2571480

ई मेल : ol@rubberboard.org.in

वेब साइट : www.rubberboard.org.in

अधयक्ष

डॉ के एन राघवन आई आर एस

संपादक

जी सुनील कुमार

सहायक निदेशक (रा भा)

सहायक संपादक

श्रीविद्या एम

वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

पत्रिका में अभिव्यक्त विचारों और मतों से रबड़ बोर्ड का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
बिक्री के लिए नहीं केवल आंतरिक परिचालन के लिए।

कमजोर किसी को माफ नहीं कर सकते,
माफ करना मजबूत लोगों की निशानी हैं।
- महात्मा गांधी

मुख पृष्ठ : रबड़ पौधशाला

रबड़ समाचार

बुलेटिन

जुलाई - सितंबर 2020 *अंक 127*

इस अंक में

रबड़ उत्पाद इंक्युबेशन केंद्र	4
रबड़ उत्पाद इंक्युबेशन केंद्र प्रचालन शुरू किया	5-6
रबड़ उत्पाद इंक्युबेशन केंद्र	7-9
युगपुरुष महात्मा गांधी	10-13
ऑनलाइन प्रशिक्षण के साथ रबड़ प्रशिक्षण संस्थान	14-15
रबड़ के विपणन के लिए रबड़ बोर्ड ई प्लाटफॉर्म तैयार कर रहा है	16-17
गुणवत्ता परीक्षण के लिए एनएबीएल मान्यता	18-20
कोट्टयम नराकास की 40वीं बैठक	21
मुख्यालय में स्वतंत्रता दिवस समारोह	22
अभिनव कोरोना	24
प्यारी कंगारू	25
ऐसा क्यों ?	26
अभियान 2020	27-28
रसोई घर	29
रबड खेती में ड्रॉन की संभाव्यताएं	30-33
अंतरिक्ष विज्ञान और भारत	33-34
हिंदी दिवस समारोह	35-38
चिकित्सा : शरीर विज्ञान नोबेल पुरस्कार	39

रबड़ उत्पाद इंक्युबेशन केंद्र

विचारों और कल्पनाओं को जगाने और विचारों को सफल बनाने की क्षमता मनुष्य को प्रकृति के अनूठे वरदानों में से एक है। शिलायुग के तेज़ हथियारों से शुरू होकर, अपने जीवन पहियों पर घुमाकर, मशीनी पंखो में उडकर अंतरिक्ष के खिडकियों से अन्यग्रह में पहूंच कर खडे हैं आज मनुष्य।

मनुष्य विकास का यह कंपन सभी क्षेत्रों में दिखाई देता है। एक आदिम खिलौने से, पचास हज़ार से अधिक महत्वपूर्ण उत्पादों में प्राकृतिक रबड़ का विकास मनुष्य के विचार की पूर्ति का एक सबूत है। चार्ल्स गुड इयर द्वारा 1839 में आविष्कृत वल्कनीकरण की प्रक्रिया ने रबड़ के मूल गुणों में कई सकारात्मक परिवर्तन लाए। तब से, हमने विभिन्न खोजों के माध्यम से रबड़ बैंड से लेकर अंतरिक्ष यानों के गैसकेट तक रबड़ से उत्पादों की एक विस्तृत श्रेणी बनाई हैं।

प्राकृतिक रबड़ के अधिकतर हिस्सों का उपयोग टायर क्षेत्र द्वारा किया जाता है। लेकिन सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्यम (एम एस एम ई) क्षेत्र में 4000 से अधिक पंजीकृत टायर इतर उत्पाद विनिर्माता भारत में हैं। निर्यात के जरिए सालाना लगभग 11000 करोड रुपए की विदेशी मुद्रा देने वाला यह क्षेत्र एक प्रमुख रोज़गार प्रदाता भी है। इनमें से ज़्यादातर लोगों के पास नवीन कौशल और अपने अनुसंधान एवं विकास सुविधाएँ नहीं हैं। यह नए उत्पादों के निर्माण और समयोचित नवाचार में बाधा डालता है। टायर इतर उत्पाद विनिर्माण क्षेत्र को प्रोत्साहन देने से, रबड़ के उपभोग में वृद्धि और रोज़गार के अधिक अवसर पैदा करना संभव हो सकता है। उपभोग में वृद्धि रबड़ की मांग में वृद्धि लाएगी तथा वह रबड़ की कीमत बढने का कारण बनेगा और अंतत: यह रबड़ क्षेत्र को समग्र रूप से और विशेष रूप से कृषकों को लाभान्वित करेगा। इस उद्देश्य से टायर इतर क्षेत्र को प्रोत्साहन देने के लिए रबड़ बोर्ड ने एक रबड़ उत्पाद इंक्युबेशन केंद्र का रूपायन किया है। इसके अलावा, प्लास्टिक जैसे कृत्रिम वस्तुओं के बदले एक विकल्प के रूप में प्राकृतिक रबड़ को विकसित करना समय की भी आवश्यकता है।

उद्यमियों के नवीन विचार अंतर्राष्ट्रीय स्तर के रबड़ उत्पाद के रूप में बदलने के एक केंद्र के रूप में रबड़ उत्पाद इंक्युबेशन केंद्र कार्य करेगा। केंद्र से जुडे तकनीकी विशेषज्ञ उत्पादों के विकास के विविध चरणों में उद्यमियों की मदद करेंगे। विभिन्न उपकरणों और मशीनों को संभालने का अनुभव यहां से मिलेगा। उद्यमी, अनुसंधान संस्थान में उपलब्ध पुस्तकों और पत्रिकाओं का उपयोग कर सकते हैं।

उत्पादों के भाव में वृद्धि ही अतिजीवन का सबसे प्रभावी उपाय है। रबड़ संसाधन - उत्पाद विनिर्माण क्षेत्र की नई सोच के साथ कोई भी इंक्युबेशन केंद्र से संपर्क कर सकता है। रबड़ उत्पाद विनिर्माण क्षेत्र को मज़बूत और जीवंत बनाने के माध्यम से कृषक सहित रबड़ क्षेत्र के प्रत्येक कडी को लाभ पहूँचाना ही इंक्युबेशन केंद्र का चरम उद्देश्य है।

डॉ के एन राघवन आई आर एस
कार्यकारी निदेशक

रबड़ उत्पाद इंक्युबेशन केंद्र प्रचालन शुरू किया

रबड़ उत्पाद विनिर्माण क्षेत्र में नई सोच लागू करने के लिए उद्यमियों की मदद करने व नवीन उत्पादों के विकास के लिए रबड़ बोर्ड कोट्टयम में स्थित रबड़ अनुसंधान केंद्र में शुरू किए रबड़ उत्पाद इंक्युबेशन केंद्र का उद्घाटन रबड़ बोर्ड अध्यक्ष और कार्यकारी निदेशक डॉ के एन राघवन आई आर एस ने किया। केंद्र का उद्घाटन करते हुए डॉ के एन राघवन ने बताया कि इंक्युबेशन केंद्र की स्थापना उत्साही टायर इतर उत्पाद विनिर्माण क्षेत्र को मज़बूत करने के उद्देश्य से की थी, जिसके 4000 से अधिक पंजीकृत इकाइयां हैं और निर्यात के जरिए

विदेशी मुद्रा के रूप में सालाना लगभग 11700 करोड रुपए की कमाई होती है। रबड़ से संबंधित नए विचारों और खोजों को पेश करना और उन्हें बेचने योग्य उत्पादों के रूप में बदलना रबड़ उत्पाद इंक्युबेशन केंद्र का उद्देश्य हैं। विभिन्न प्रकार के उत्पादों के निर्माण से प्राकृतिक रबड़ के उपयोग और उपभोग बढाने में और प्लास्टिक के बदले एक विकल्प के रूप में प्राकृतिक रबड़ को बनाने में भी रबड़ उत्पाद इंक्युबेशन केंद्र मदद करेगा, उन्होंने बताया।

रबड़ उत्पाद इंक्युबेशन केंद्र नए विचारों और अवधारणाओं का एक केंद्र बन जाएगा और नई पीढी के कृषक उनके विचारों को केंद्र की सुविधाएं इस्तेमाल करके बेहतर उत्पादों में बदल देंगे - रबड़ अनुसंधान संस्थान निदेशक डॉ जेइम्स जेकब ने आशा व्यक्त की। उद्घाटन के दौरान टायर इतर उद्यमियों की ओर से सिबी सेबास्ट्यन और सुधीन्द्रन ने वक्तव्य दिया।

टायर इतर उत्पाद विनिर्माता अधिकतर एम एस एस ई क्षेत्र से हैं। इनमें से ज़्यादातर लोगों के पास नवीन कौशल और अपने अनुसंधान एवं विकास सुविधाएँ नहीं हैं। यह समयोचित नवाचार और तकनीकी उन्नति में बाधा डालता है। रबड़ उत्पाद इंक्युबेशन केंद्र से मतलब इसके लिए एक समाधान

रबड़ उत्पाद इंक्युबेशन केंद्र के विविध उपकरण

है। उद्यमियों के नए-नए विचार, तकनीकी मानदण्डों के अनुरूप गुणतायुक्त रबड़ उत्पाद बनाने के लिए एक केंद्र के रूप में रबड़ उत्पाद इंक्युबेशन केंद्र कार्य करेगा। रबड़ उत्पाद इंक्युबेशन केंद्र से जुडे वैज्ञानिक और अभियंता उद्यमियों को उत्पाद के विकास के विविध चरणों में मदद करेंगे। विभिन्न प्रकार के उपकरणों और मशीनों को संभालने का अवसर भी यहां से मिलेगा। उद्यमी रबड़ अनुसंधान संस्थान में उपलब्ध पुस्तकों और पत्रिकाओं का उपयोग कर सकते हैं। रबड़ कृषि, संसाधन, उत्पाद विकास, उत्पादों का पुनः उपयोग, प्रदूषण नियंत्रण आदि विषयों में नवीन सोचों पर विचार किया जाएगा। रबड़ उत्पाद विनिर्माण क्षेत्र को मज़बूत और जीवंत बनाना और प्राकृतिक रबड़ के उत्पादक कृषकों के साथ काम करके इस क्षेत्र की प्रत्येक कडी को सशक्त बनाना इंक्युबेशन केंद्र का चरम उद्देश्य है।

भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान परिसर के रबड़ प्रौद्योगिकी पर प्रोन्नत केंद्र कॉम्प्लेक्स के निचले तल में रबड़ इंक्युबेशन केंद्र कार्यरत है।

रबड़ उत्पाद इंक्युबेशन केंद्र

डॉ सिबी वर्गीस
भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान

मधुसूदनन
भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान

डॉ जेइम्स जेकब
भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान

रबड़ क्षेत्र से जुडे नए उद्यम शुरू करने के लिए इच्छुक कई युवा हमारे बीच हैं। वे रबड़ उत्पाद इंक्युबेशन केंद्र जैसी एक सुविधा से कैसे लाभ उठा सकते हैं ... इस लेख में बताया है।

रबड़ क्षेत्र की गतिविधियों की बारीकी से निगरानी करके समस्याएं हैं तो उसके समाधान के लिए आवश्यक कदम उठाना रबड़ बोर्ड के उद्देशों में एक है। भारत का रबड़ उत्पाद विनिर्माण क्षेत्र विभिन्न समस्याओं का सामंना कर रहा है। मौजूदा समस्याओं को समझने और समाधान खोजने के लिए क्षेत्र से संबंधित लोगों की भागीदारी के साथ कई चर्चाएं और संगोष्ठियां आयोजित की जाती हैं। रबड़ उत्पाद इंक्युबेशन केंद्र नाम की नई सुविधा का प्रवर्तन रबड बोर्ड ने ऐसे मंचों से उत्पन्न विचारों को लागू करने के उद्देश्य से किया था। पुतुप्पल्ली में स्थित भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान में कार्यरत रबड़ उत्पाद इंक्युबेशन केंद्र का उद्घाटन डॉ के एन राघवन आई आर एस, अध्यक्ष एवं कार्यकारी निदेशक ने किया था।

केंद्र सरकार और ज्यादातर राज्य सरकारें नए उद्यम प्रोत्साहित करने के लिए कई योजनाएं कार्यान्वित कर रही हैं। अभियंता सहित कुशल युवाओं को अपने ही उद्यम शुरू करने के लिए आवश्यक सुविधाएँ प्रदान करने के लिए सरकार ने स्टार्ट अप कार्यक्रमों की शुरूआत कीं थीं। उद्योग सहित कार्यों को शुरू करते समय कई कार्यों से गुजरना पडता हैं। यदि इन सभी जरूरतों को एक सामान्य प्रणाली के माध्य से उपलब्ध करा सकते है तो वह उद्यमियों के लिए एक बडी राहत होगी। स्टार्ट अप कार्यक्रमों के लिए ऐसी सार्वजनिक मंचें सरकार-स्तर पर स्थापित किया जा रहा हैं। उद्यमियों को उनके उद्यम तेज़ी से पूरा करने के लिए और विपणन संभावनाओं की खोज करने के लिए ऐसी प्रणालियां मदद करेगी।

रबड़ बोर्ड द्वारा शुरू किए रबड़ उत्पाद इंक्युबेशन केंद्र की गतिविधियां लगभग स्टार्ट-अप के लिए आवश्यक सुविधाओं के समान हैं। गैर टायर उत्पादों के निर्माण के लिए भारत में लगभग 4000 से अधिक पंजीकृत इकाइयां कार्यरत हैं। लगभग उतना ही गैर पंजीकृत

इकाइयां इस असंगठित क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। ऐसी छोटी इकाइयों से जहां बडी संख्या में श्रमिक कार्यरत हैं, 2018-19 के दौरान लगभग 11740 करोड रुपए के उत्पादों का निर्यात किया गया। इस तरह ऐसी इकाइयां मौजूद रहने की आवश्यकता हम समझ सकते हैं। टायर विनिर्माण इकाइयों में तकनीकी ज्ञान वाले विशेषज्ञ काफी हैं। उत्पाद की गुणवत्ता के निरीक्षण के लिए सुविधाएं भी उनके पास हैं। लेकिन एम एस एम ई क्षेत्र के लगभग अधिकतर उत्पादकों की सबसे बडी समस्या कुशल तकनीकी विशेषज्ञों की कमी है। उसी तरह अनुसंधान कार्यालय भी नहीं हैं। उनके समयबद्ध नवीकरण और तकनीकी उन्नयन में ऐसी कमियां बाधा डालती हैं। परिणामस्वरूप, प्रौद्योगिकी में समयबद्ध तरीके से करने के नवीकरण पर बाधा आने के साथ ही साथ देशी और विदेशी निर्यात के अवसर भी खो जाएंगे। छोटे उत्पादन क्षेत्र के अस्वास्थ्यकार प्रतिस्पर्धा और उत्पादों की गुणवत्ता में गिरावट के कारण कई इकाइयों का विनाश हुआ है।

ऐसी कमियों को सुधारना ही इंक्युबेशन केंद्रों को खोलने से रबड़ बोर्ड का लक्ष्य है। रबड़ उत्पादन क्षेत्र के किसी भी व्यक्ति के नवीन विचार संयुक्त रूप से विकसित करके विपणन केंद्र में पहूँचाने का विचार पहली बार एक सार्वजनिक क्षेत्र में कार्यान्वित कर रहा है। हमारे देश के अंदर और बाहर के किसी को रबड़ उत्पाद विनिर्माण से जुडे कोई नवीन विचार हो तो उनको वैश्विक स्तर की सुविधाएं वाली अनुसंधान प्रयोगशालाओं में तकनीकी विशेषज्ञों के नेतृत्व में बेहतर उत्पाद के रूप में परिवर्तित करने की सुविधा इंक्युबेशन केंद्र में बनाई गई है। वैज्ञानिक और तकनीकी विषयों में हाथ मिलाके चलने से रबड़ उत्पाद उद्योग इकाइयों को तकनीकी विषयों में आत्मनिर्भर होने के लिए और आपसी सहयोग से वैश्विक स्तर पर मुकाबला करने का मंच का सृजित करने में इस केंद्र की गतिविधियां मदद करेंगी।

अब देखेंगे इंक्युबेशन केंद्र की प्रचालन विधि। इस केंद्र में व्यक्तियों द्वारा दिए जाने वाले नवीन विचार तकनीकी विशेषज्ञों की देखरेख में विश्लेषण करके उस विचार के विपणन संभावना का मूल्यांकन करेंगे। उसके बाद यदि योग्य पाया जाता है तो व्यक्ति जिन्होंने नवीन विचार पेश किया है उनके नाम पर आवेदन पंजीकृत करेंगे। बाद में पंजीकृत आवेदकों को अवधारणा से संबंधित विषयों में केंद्र के विशेषज्ञों के साथ बातचीत करने का अवसर दिया जाता है। अवधारणाएं तकनीकी तौर पर विकसित करने के लिए समय लगेगा। इस अवधि के दौरान, आवेदक को केंद्र में ही सभी सुविधाओं के साथ एक कार्यालय कक्ष आबंटित किया जाएगा। उद्यम से जुडी अवधारणा की गोपनीयता शुरुआत से लेकर अंत तक बनाए रखने का करार भी पंजीकृत किया जाएगा।

आम तौर पर एक नवीन अवधारणा केंद्र में पोषित

करने के लिए छः महीने की अवधि की अनुमति दी जाती है। परीक्षण और चर्चाएं जितना अधिक आवश्यक होगी उसके लिए आवश्यक अधिक समय की अनुमति भी दी जाएगी।

पंजीकृत आवेदन के अनुसार अवधारणा व्यावहारिक स्तर पर अवधारणा के सफल समापने के बाद उससे सबंधित एक विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार की जाती है। इसके साथ पंजीकृत अवधारणा का इंक्युबेशन समय पूरा हो जाएगा। आवेदक द्वारा प्रदान की गई अवधारणा की गोपनीयता नष्ट न होने के लिए केंद्र सभी संभावित सावधानी बरतेंगे।

सार्वजनिक और निजी क्षेत्र में नए उद्यमों की शुरुआत करने के लिए अब बहुत सारे अवसर हैं। रोज़गार की तलाश कर रहे शिक्षित युवाओं को ऐसे उद्यम क्षेत्र में प्रवेश करने में रुचि पैदा करने के लिए केंद्र की कार्रवाई मदद करेगी। केंद्र के विशेषज्ञों के साथ चर्चाएँ और प्रयोगिक अवलोकन के माध्यम से स्टार्ट-अप हासिल करने के लिए आवश्यक सभी ज्ञान और बेहतरीन योजना बनाने की क्षमता उद्यमी प्राप्त कर सकते हैं। बिलकुल वैज्ञानिक अवलोकन और अध्ययन की मदद से शुरू करने वाले उद्यम सफलता हासिल करेंगे, इसमें कोई संदेह नहीं है।

श्रीमती महादेवी वर्मा के अन्य अनेक काव्य संकलन भी प्रकाशित हैं, जिनमें उपर्युक्त रचनाओं में से चुने हुए गीत संकलित किए गए हैं, जैसे आत्मिका, परिक्रमा, संधिनी, यामा, गीतपर्व, दीपगीत, स्मारिका, नीलांबरा और आधुनिक महादेवी आदि। महादेवी जी कवयित्री होने के साथ-साथ विशिष्ट गद्यकार भी थी।

काव्य संग्रह -

1. नीहार
2. रश्मि
3. नीरजा
4. सांध्यगीत
5. दीपशिखा
6. सप्तपर्णा (अनूदित)
7. प्रथम आयाम
8. अग्निरेखा

गद्य साहित्य

रेखाचित्र - अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएं
संस्मरण - पथ के साथी, मेरा परिवार, संस्मरण
निबंध - श्रृंखला की कडियां, विवेचनात्मक गद्य, साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध, संकल्पिता
ललित निबंध - क्षणदा
कहानियां - गिल्लू
संस्मरण, रेखाचित्र और निबंधों का संग्रह - हिमालय
महादेवी वर्मा का बाल साहित्य - ठाकुरजी भोले हैं, आज खरीदेंगे हम ज्वाला

युगपुरुष महात्मा गांधी

चंद्रलेखा के
क्षेत्रीय अधिकारी
प्रादेशिक कार्यालय, चंगनाश्शेरी

महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के अवसर पर रबड़ बोर्ड में आयोजित अखिल भारतीय निबंध लेखन प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त निबंध

हमारा भारत महान स्त्रियों और पुरुषों का देश है। कई महापुरुषों ने हमारी आज़ादी की लडाई में अपना तन-मन-धन, परिवार और सब कुछ अर्पण कर दिया। उन महान पुरुषों में एक थे महात्मा गाँधी। स्वभावत: वह आम व्यक्ति नहीं थे। महात्मा गांधी युगपुरुष थे जिनके प्रति पूरा विश्व आदर की भावना रखती थी।

महात्मा गाँधी का पूरा नाम मोहनदास करमचंद गांधी था। इस महापुरुष का जन्म 2 अक्तूबर सन 1869 को गुजरात में पोरबंदर नामक स्थान पर हुआ था। आपके पिता करमचंद गांधी राजकोट के दीवान थे। माता पुतलीबाई धार्मिक एवं अत्यंत सरल महिला थी। मोहनदास के व्यक्तित्व पर माता के चरित्र की छाप स्पष्ट दिखाई दी।

प्रारंभिक शिक्षा पोरबंदर में पूर्ण करने के बाद राजकोट से मेट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण कर आप वकालत करने इंगलैंड चले गए। प्रारंभ में उन्हें इंगलैंड में अनेक समस्याओं का सामना करना पडा। अंग्रेज़ी सभ्यता से सर्वाथा अपरिचित होने के कारण वे उनसे संवाद नहीं कर पाते थे। वे शाकाहारी रहने के वचन का पालन करते रहे। सन् 1891 में वे बैरिस्टर बन वापस आए।

बारिस्टर बनके लौटने पर उन्होंने राजकोट में वकालत प्रारंभ की। लेकिन इस क्षेत्र में उन्हें असफलता का मुंह देखना पडा। अत: गांधीजी ने वकालत छोड अध्यापन कार्य प्रारंभ कर दिया। कुछ दिनों के बाद एक मुकदमा के दौरान आपको दक्षिण आफ्रिका जाना पडा। वहां भारतीयों की दुर्दशा देख बडे दुखी हुए। आफ्रिका-वास उनके जीवन को महत्वपूर्ण मोड देने का उपकरण बन गया। वहाँ उन्होंने जाति एवं रंगभेद का नंगा नाच देखा।

जनवरी 1915 को बंबई पहूँचने पर जनता ने उनका भव्य स्वागत किया और उन्हें महात्मा कहने लगे। गांधीजी ने साबरमती नदी के किनारे सत्याग्रह आश्रम की स्थापना की। उन्होंने हमारे देश की आज़ादी के लिए कदम उठाना शुरू किया।
सत्य एवं अहिंसा के मार्ग पर चलते हुए उन्होंने अनेक आंदोलन चलाए और सफलता भी प्राप्त की, भले ही उनको अनेक यातनाएं सहनी पडी, जेल जाना पडा, भूखा रहना पडा किंतु वह अपने कर्म से विचलित नहीं हुए और संपूर्ण राष्ट्र की जनता उनके साथ ही थे। वे केवल आंदोलनकर्ता ही नहीं लेकिन महान दार्शनिक भी थे। उन्होंने एक आदर्श

राषट्र एवं समाज की स्थापना हेतु विभिन्न सिद्धांतों का वर्णन नहीं किया।

गांधीजी द्वारा सन् 1918 में चलाया गया चंपारन और खेडा सत्याग्रह भारत में उनके आंदोलनों की शुरूआत थी और इसमें वे सफल रहे। सन् 1920 में कॉंग्रेस लीडर बाल गंगाधर तिलक की मृत्यु के बाद गांधीजी ही कॉंग्रेस के मार्गदर्शक थे। गांधीजी ने अंग्रेज़ों से विरोध को प्रकट करने के लिए सत्याग्रह को अपना प्रमुख अस्त्र बनाया। सत्य, अहिंसा रूपी अस्त्रों के सामने अंग्रेजों की कुटिल नीति और अमानवीय व्यवहार के विरुद्ध गांधीजी ने सत्याग्रह आंदोलन आरंभ किए। असहयोग आंदोलन एवं सविनय अवज्ञा आंदोलन का नेतृत्व किया। उन्होंने अपनी आत्मकथा को सत्य के प्रयोग का नाम दिया।

चंपारण सत्याग्रह आंदोलन

गांधीजी ने कहा कि सबसे महत्वपूर्ण लडाई लडने के लिए अपने दुष्टात्माओं, भय और असुरक्षा जैसे तत्वों पर विजय पाना है। उन्होंने अपने विचारों को सबसे पहले उस समय संक्षेप में व्यक्त किया जब उन्होंने अपने इस कथन को सत्य ही भगवान है में बदल दिया। इस प्रकार सत्य में गांधी के दर्शन है परमेश्वर।

अहिंसा और अप्रतिकार का भारतीय धार्मिक विचारों में एक लंबा इतिहास है। अहिंसा के माध्यम से असत्य पर आधारित बुराई का विरोध ही गांधीजी के अनुसार सत्याग्रह है। उनका मत था कि प्रत्येक व्यक्ति में सत्य अवश्य होता है। असत्य को सत्य से और बुराई को भलाई से जाता जा सकता है। इनके मतानुसार सत्याग्रही के पास पर्याप्त आत्मबल का होना अत्यधिक आवश्यक है। साथ ही सत्याग्रही को सुख का परित्याग कर, अनेक दुख अथवा यातनाएं सहकर बुराई का प्रतिरोध करना पड सकता है।

सत्याग्रही को अपना उद्देश्य प्राप्त करने के लिए अनेक साधनाओं का प्रयोग करना पडता है। जिनमें प्रमुख हैं - उपवास, धरना, हडताल, सविनय अवज्ञा, सामाजिक बहिष्कार इत्यादि। गांधीजी के सत्याग्रही विचारधारा अहिंसा पद्धति से पूर्णरूपेण संबंधित है। यहां केवल किसी जीव मात्र की हत्या न करना अहिंसा नहीं है। लेकिन यह एक नैतिक दृष्टि है जो प्राणी के एकत्व पर आधारित बल है। उनके मतानुसार विरोधी से भयभीत रहकर अहिंसक बने रह नहीं सकते। उनका मानना था कि हमको पाप से लडना चाहिए, नहीं पापी से। बडे से बडा पापी भी मनुष्य ही है, उसके भीतर भी ईश्वर का अंश है। उनके अनुसार केवल ईश्वर ही शुभ और सत्य है। ईश्वर, सत्, चित् तथा आनंद का समन्वय है।

गाँधीजी ने अपनी आत्मकथा में दर्शन और अपने जीवन के मार्ग का वर्णन किया है। उन्हें कहते हुए बताया गया था - ñजब मैं विचार करता हूँ तब मैं याद करता हूँ कि हालांकि इतिहास सत्य का मार्ग होता है किंतु प्रेम सदैव जीत लेता है। मरने के लिए मेरे पास बहुत से कारण हैं किंतु मेरे पास किसी को मारने का कोई भी कारण नहीं हैं।ò गांधीजी सप्ताह में एक दिन मौन धारण करते थे। उनका मानना था कि बोलने के परहेज से उन्हें आंतरिक शांति मिलती है।

उनका जन्म हिंदु धर्म में हुआ था। उनके पूरे जीवन में अधिकतर सिद्धांत की उत्पत्ति हिंदुत्व से हुई। लेकिन उन्होंने कहा कि मैं एक हिंदु हूँ, एक ईसाई, मुस्लिम, बौद्ध और यहूदी भी हूँ। सर्वधर्म समभाव के सिद्धांत के धीर पक्षपाती थे। उन को इस बात का स्मरण है कि किसी के धर्म ग्रंथ में

दूसरे अन्य धर्म की निंदा नहीं की गई है। धर्म निरपेक्षता का सबसे बडा उदाहरण हमें गांधीजी में ही देखने को मिलता है।

महात्मा गांधी एक महान लीडर था। लेकिन अपने सामाजिक जीवन में वे सादा जीवन उच्च विचार को माननेवाले व्यक्तियों में से एक थे। उनके इसी स्वभाव के कारण उन्हें लोग महात्मा कहकर संबोधित करने लगे थे। वे प्रजातंत्र के बडे भारी समर्थक थे। उनके व्यक्तित्व कुछ ऐसा था कि उनसे मिलने पर हर कोई उनसे बहुत प्रभावित हो जाता था। सभी ईश्वर की संतान हैं, अतः इस दृष्टि से सभी व्यक्ति समान हैं। यदि कोई व्यक्ति किसी दूसरे को वंश, रंग, भाषा, जाति के आधार पर भेदभाव करता है तो वह ईश्वर के नियमों का उल्लंघन करता है। सभी का ईश्वर एक है इसलिए सभी का धर्म भी एक ही होना चाहिए।

गांधीजी ने अछूतों का उद्धार किया। उन्हें हरिजन नाम दिया। उन्होंने सबसे पहले अपने साबरमति और सेवाग्राम आश्रम में काम किया और हरिजन नामक पत्रिका का प्रकाशन आरंभ किया। उनका रामराज्य सर्वोदय का सिद्ध समभाव और सर्व जन हिताय पर आधारित है। उन्होंने भाषा, जाति और धर्म संबंधी भेदों को समाप्त करने का आजीवन प्रयत्न किया। स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग पर ज़ोर दिया। सूत कातने, सब धर्मों को आदर से देखने और सत्य अहिंसा को जीवन में अपनाने की शिक्षा दी। गांधीजी ने विश्व को शांति का संदेश दिया।

सर्वोदय शब्द दो शब्दों से मिलकर बना हैं। सर्वउदय - अर्थ है सभी का उत्थान। समाज में सभी व्यक्ति के उत्थान वे चाहते थे। वे जानते थे कि स्त्री-पुरुष के बीच भेद-भाव का प्रमाण नहीं है।

उन्होंने भारतीय जनता को खादी पहनने और विदेश वस्त्रों को बहिष्कार के लिए कहा। वे चरखों के माध्यम से उद्योगों को पुननिर्मित करना चाहते थे।

गांधिजी के अनुसार शिक्षा, केवल साक्षर होना नहीं था, लेकिन शरीर और आत्मा का विकास मानते थे। स्त्रियों को पुरुषों के समान शिक्षा दी जाए।

गांधीजी का स्वतंत्रता का सिद्धांत नैतिकता पर आधारित है।

हिंतु-मुस्लिम एकता का अवसर समझकर नेतृत्व में कॉंग्रेस ने खिलाफत का समर्थन किया। मार्च 1930 में अपने चुने हुए 78 अनुयायियों के साथ साबरमती आश्रम से दाण्डी तक पदयात्रा पूरी करके समुद्र जल से नमक बनाकार नमक कानून का उल्लंघन किया।

सन् 1942 में महात्मा गांधी द्वारा चलाया गया तीसरा बडा आंदोलन था भारत छोडो आंदोलन। इसके संचालन में हुई गलतियों के कारण यह आंदोलन जल्दी ही धराशाई हो गया। लेकिन इससे ब्रिटिश शासकों को यह एहसास हो गया था, कि अब भारत में उनका शासन नहीं चल सकता, उन्हें आज नहीं तो कल भारत छोडकर जाना होगा।

2 अक्तूबर गांधीजी का जन्मदिन है। इस दिन अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में मनाता है।

गांधीजी के कारण आज हमारे देश का स्वतंत्र अस्तित्व है। आधुनिक भारतीय राजनीति एवं सामाजिक इतिहास में महात्मा गांधी का योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण है। उनके बिना भारत की स्थिति क्या होती और स्वतंत्रता आंदोलन पर क्या प्रभाव पडता। अपने विचारों और नेतृत्व क्षमता के कारण गांधीजी लगभग चालीस वर्ष तक भारत की राजनीतिक, सामाजिक और नैतिक चेतना के केंद्र बिंदु बने रहे। उन्होंने प्रेम और भाईचारे की भावना से भारत की जनता के हृदय पर राज किया। वे देश में रामराज्य स्थापित करना चाहते थे। अपने लेखों के माध्यम से उन्होंने तत्कालीन समस्याओं पर भी प्रकाश डाला।

उन्होंने समस्त देश में सांप्रदायिक सौहार्द एवं राष्ट्रीय एकता की भावना का महत्व समझाया।

लेकिन देश का विभाजन भारत और पाकिस्तान के रूप में हो गया। इस बात का उन्हें बहुत दु:ख हुआ।

भारत सरकार प्रतिवर्ष उल्लेखनीय सामाजिक कार्यकर्ताओं, विश्व के नेताओं और नागरिकों को महात्मा गांधी शांति पुरस्कार से पुरस्कृत करती है। आज जितने भी नोट इस्तेमाल में हैं उनपर गांधीजी का चित्र है।

युनाइटेड किंग्डम में जनवरी 30 को राष्ट्रीय गांधी स्मृति दिवस मनाया जाता है। प्रतिवर्ष 30 जनवरी को गांधीजी के पुण्य तिथि पर कई देशों के स्कूलों में अहिंसा और शांति का स्कूली दिन मनाया जाता है जिसकी स्थापना स्पेन में हुई थी।

महात्मा गांधी को ब्रिटिश शासन के खिलाफ भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का नेता और राष्ट्रपिता माना जाता है। उनके उच्चादर्शों एवं सत्य के सम्मुख ब्रिटिश को झुकना पडा और वे हमारा देश छोड चले गए। इस प्रकार हमारा देश 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्र हुआ। गांधीजी का जीवन तथा सलाह कई लोगों को प्रेरित करते है जो गाँधीजी को अपना गुरु मानते हैं या जो गांधी के विचारों का प्रसार करने में अपना जीवन समर्पित कर देते हैं।

30 जनवरी 1948 को एक कट्टरपंथी गोडसे ने उन्हें दिल्ली के बिरला मंदिर में गोली मार दी। महापुरुष गांधीजी की मृत्यु पर सारा देश शोकाकुल हो उठा। प्रधानमंत्री नेहरूजी ने महात्मा गांधी की हत्या की सूचना इस प्रकार दी - ñहमारे मन से प्रकाश चला गया और चारों तरफ अंधेरा छा गया है। मैं नहीं जानता कि आपको क्या बताऊं और कैसे बताऊं। हमारे प्यारे नेता राष्ट्रपिता बापू अब नहीं रहे। गाँधी वास्तव में भारत के राष्ट्रपिता हैं।ò

भारत मेरे सपने में

कविता

के विजयम्मा,
सहायक निदेशक (सेवानिवृत्त),
रबड बोर्ड

आशा करती हूँ मैं, ऐसे
भारत देश जहाँ
सत्यम, शिवम और सुंदरता के
दीप जलाओ हर घर में।

ये सपने भी मैं देखूँ
मेरी धरती के हर कोने
मानव शक्ति ही रहो ऊँचे
मानवता ही बढो, बढो।

कोई यंत्र नहीं कर सकता
श्रृंग हिमालय चढाने में
ऐसे मानवशक्ति, जुटाना
आज की अवश्य चाहत।

विकास पथ पर उडता भारत
पूरित होने में ये सपने
एकता और अखण्डता के
जुटे मानव शक्ति रहें।

ऑनलाइन प्रशिक्षण के साथ रबड़ प्रशिक्षण संस्थान

पी सुधा
निदेशक (प्रशिक्षण)

आधुनिक तकनीक की मदद से कई जगह के लोगों को ऑनलाइन द्वारा आपस में बातचीत करने की सुविधा अब है। कोविड - 19 के प्रसार ने इस प्रकार के वैकल्पिक सुविधाओं का उपयोग बढाया है। इस लेख में रबड़ बोर्ड ऑनलाइन तकनीकों का उपयोग करके चलाने वाले प्रशिक्षणों के बारे में विवरण देता है।

रबड़ प्रशिक्षण संस्थान रबड़ की खेती, उत्पादन, फसल प्रसंस्करण, उत्पाद विनिर्माण, विपणन, अधिक आय सृजन उपाय आदि रबड़ क्षेत्र से जुडे सभी विषयों में प्रशिक्षण देता है। सभी प्रशिक्षुओं को अपने-अपने क्षेत्र में बेहतर कार्य निष्पादन के लिए आवश्यक कौशल विकास प्रदान करना रबड़ बोर्ड का उद्देश्य है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर की प्रशिक्षण सुविधाएं यहां उपलब्ध हैं। संस्थान के पुतुप्पल्ली में स्थित प्रशिक्षण केंद्र में और अन्य चयनित केंद्रों में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। रबड़ प्रशिक्षण संस्थान रबड़ कृषक, रबड़ खेती संबंधित कार्य करने वाले उद्यमियों, उत्पाद विनिर्माताओं, व्यापारी, श्रमिक, बागान प्रबंधक, शोधकर्ताओं जिन्हें रबड़ से जुडे विषयों पर ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता है और छात्रों को आवश्यकतानुसार प्रशिक्षण प्रदान करता है।

कोविड-19 के प्रसार के कारण लॉकडाउन हुआ और सामाजिक दूरी बनाए रखने की स्थिति बनी, ऐसी स्थिति में मौजूदा प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना संभव नहीं है। लेकिन रबड़ प्रशिक्षण संस्थान समाजिक माध्यम सहित सभी क्षेत्रों में होने वाले तकनीकी विकास का अधिकतम लाभ उठाकर इस स्थिति को दूर करने की कोशिश कर रहा है। इसी के हिस्से के रूप में कुछ प्रशिक्षण कार्यक्रम और संगोष्ठियां पहले ही ऑनलाइन माध्यम से आयोजित किए जा चुके हैं। इस तरह की प्रणालियों के माध्यम से रबड़ क्षेत्र से जुडे प्रशिक्षण कार्यक्रम जारी रखने का इरादा है रबड़ बोर्ड का। लेकिन कार्यक्रम के सफल कार्यान्वयन के लिए, कृषकों सहित प्रशिक्षणार्थियों को ऑनलाइन प्रशिक्षण माध्यम के बारे में जानकारी होनी चाहिए। नई प्रणालियों के माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रमों और संगोष्ठियों में कृषकों और श्रमिकों की भागीदारी सुनिश्चित की जानी चाहिए।

ऑनलाइन मीडिया के माध्यम से आयोजित बातचीत के दृश्य

प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने की लिंक रबड़ बोर्ड की वेबसाइट और रबड़ प्रशिक्षण संस्थान और रबड़ बोर्ड की फेसबुक पृष्ठों में उपलब्ध हैं।

आम तौर पर हर एक कार्यक्रम डेढ - दो घंटे तक के होते हैं। प्रशिक्षण में भाग लेने वालों को संदेह पूछने और चर्चा में भाग लेने की सुविधा भी ऑनलाइन प्रशिक्षण प्रणाली में है।

पर्सनल कंप्यूटर और लैपटॉप का इस्तेमल करके प्रशिक्षण में कैसे भाग लें ?

ऑनलाइन बैठकों में भाग लेने के लिए अब कई प्रणालियां मौजूद हैं। सिसको वेबेक्स मीटिंग , गूगल मीट, जियो प्लाटफोर्म आदि इसके उदाहरण हैं। आम तौर पर ऑनलाइन बौठकों में भाग लेने के लिए इस्तेमाल करने वाला आप्लिकेशन डाउनलॉड करके सिस्टम में इन्स्टॉल करने की आवश्यकता है। लेकिन पर्सनल कंप्यूटर और लैपटॉप इस्तेमाल करके सिस्को वेबेक्स मीटिंग प्रणाली से प्रशिक्षण में भाग लेने के लिए वेबेक्स का आप्लिकेशन इन्स्टॉल करना अनिवार्य नहीं है। प्रशिक्षण या मीटिंग आयोजित करने वाले पहले ही ई मेल द्वारा प्रदत्त लिंक में क्लिक करने से सिस्टम में इंस्टॉल किए ब्राउसर से वेबेक्स बैठक प्रणाली खुल जाएगी। प्रशिक्षण में भाग लेने वालों को कंप्यूटर के डायलॉग बक्स बताए अनुसार नाम, ई मेल पता आदि दर्ज की जानी चाहिए। बाद में नेक्स्ट बटन दबाना है। उसके बाद हरे रंग का जोइन बटन दबाकर प्रशिक्षण में भाग ले सकते है।

आयोजकों द्वारा दिए जाने वाले लिंक का उपयोग करके गूगल मीटिंग/प्रशिक्षण में भाग लेते है। गूगल खाता धारक लिंक का इस्तेमाल करके बैठक में भाग ले सकते हैं।

मोबाइल फोन का उपयोग करके प्रशिक्षण में कैसे भाग लें ?

मोबाइल फोन के प्ले स्टोर से सिस्को वेबेक्स मीटिंग आप्लिकेशन डाउनलॉड करके फोन में इन्स्टॉल करना चाहिए। प्रशिक्षण शुरू होने के पन्द्रह मिनट पहले, पहले से दिए हुए लिंक को दबाएं। लिंक खोलने के लिए फोन में इंस्टॉल किया हुआ वेबेक्स आप्लिकेशन चुन लें। मोबाइल फोन में आने वाले निर्देशानुसार नाम और ई मेल पता अंकित करें। बाद में हरे रंग का जोइन बटन दबाकर प्रशिक्षण में भाग ले सकते है।

मोबाइल फोन से गूगल मीटिंग में भाग लेने के लिए आपको गूगल मीट आन्ड्रोइड ऐप गूगल प्ले स्टोर से डाउलॉड करना होगा।

गांधी ने कहा था.....

हमारा आंगन साफ है, बस इतने से ही हमें संतोष नहीं मान लेना चाहिए हमें यह भी देखना चाहिए कि हमारे पडोसी का आंगन भी साफ है न !..... जितना खयाल हम अपना रखते हैं, अपने पडोसी का उससे ज्यादा खयाल रखें। अपने आंगन का कूडा-कचरा अपने पडोस में डाल देना, यह मानव-जाति की सेवा नहीं, कुसेवा है।

रबड़ के विपणन के लिए रबड़ बोर्ड ई प्लाटफॉर्म तैयार कर रहा है

प्राकृतिक रबड़ बाजार में खरीद और बिक्री में अधिक पारदर्शिता लाने और अधिक ग्राहक जानकारी उपलब्ध कराने के लिए रबड़ बोर्ड एक ई-व्यापार प्लाटफोर्म तैयार कर रहा है। रबड़ के हस्तांतरण के लिए एक वैकल्पिक विपणन उपाय भी है यह। रबड़ बोर्ड और ई व्यापार प्लाटफोर्म प्रदाताओं के सहयोग में संयुक्त उद्यम के रूप में इसे तैयार करने की प्रक्रिया आगे बढ रही हैं।

उत्पादकों, व्यापारियों, उत्पाद विनिर्माताओं सहित मौजूदा व्यापार श्रृंखला को अधिक मज़बूत करने और उन्हें ई-ट्रेडिंग प्लाटफोर्म की ओर आकर्षित करने के लिए है यह योजना। यह, सभी कृषि उत्पादों के लिए ई-ट्रेडिंग शुरू करने की केंद्र सरकार नीति के अनुरूप है। रबड़ उत्पादक संघ जैसे किसान संघों, सहकारी समितियों, रबड़ बोर्ड के स्वामित्व वाली कंपनियों और ग्रामीण स्तर पर कार्यरत छोटे रबड़ व्यापारियों को ई-प्लाटफोर्म में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किए जाएंगे और जिससे विपणन क्षेत्र में अधिक ध्यान आकर्षित करने के अवसर प्रदान किए जाएंगे।

रबड़ के खरीदार और विक्रेता को आवश्यानुसार बोली लगाने की एक व्यापार सुविधा प्लाटफोर्म के रूप में ई-व्यापार प्लाटफोर्म की परिकल्पना की गई है। भाव के मिलान के बाद व्यापार मानकों वाले डिजिटल हस्ताक्षरित करार बनाएंगे और ई मेल द्वारा दोनों पक्षों को भेजे जाएँगे। धन हस्तांतरण के लिए आवश्यक भुगतान गेटवे भी उपलब्ध कराया जाएगा। मात्र पंजीकृत विक्रेताओं, फैक्टरियों से रबड़ की खरीद करने वाले विनिर्माताओं के लिए व्यक्तिगत व्यापार पृष्ठ खोलने का भी उद्देश्य है। ई -व्यापार के हिस्से के रूप में गुणवत्ता प्रमाणन प्रणाली भी पेश की जाएगी। यह टायर इतर क्षेत्र की निरंतर मांग भी है।

प्राकृतिक रबड़ की विपणन श्रृंखला में रबड़ व्यापारियां सहकारी समितियां, किसान संघ, रबड़ संसाधक और रबड़ उत्पाद विनिर्माताएं शामिल हैं। वर्तमान में व्यापार अनौपचारिक धारणाओं के साथ पारंपरिक तरीके में *स्पोट* आधार पर किया जाता है। उपभोग क्षेत्र से गुणता ज़रूरत और परिमाण के अनुसार रबड़ के बाजार में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। गुणवत्ता वाले रबड़ को बेहतर कीमत तो मिल रही है लेकिन बडी मात्रा में रबड़ का विपणन श्रेणीकृत किए बिना भी किया जा रहा है। इसके अलावा, सही बाजार परिचय के अभाव में कृषकों द्वारा कष्टता भोगने की स्थिति भी है। यह अक्सर गुणवत्ता वाली सामग्रियां बनाने से उन्हें रोकते है। रबड़ व्यापार में लगे लोगों की संख्या वर्ष 2000 में 10512 थी अब यह 7135 में सीमित हो गई। आय की कमी की वजह से युवा पीढी रबड़ के व्यापार से दूर रहने की एक रुख होने के कारण यह स्थिति आगामी वर्षों में भी जारी रहने की संभावना है। व्यापारियों की संख्या कम होना भेदभावपूर्ण निर्णय और शोषण का कारण बन सकता है। यह कृषकों के रबड़ उत्पादन की रुचि कम कर देगी। इन चुनौतियों को प्रभावी ढंग से पार करने में मदद करने वाली एक वैकल्पिक प्रणाली होना इल्क्ट्रोणिक ट्रेडिंग प्लाटफोर्म का उद्देश्य है।

रबड़ उत्पाद विनिर्माण उद्योग, खासकर टायर इतर क्षेत्र गुणवत्तायुक्त रबड़ की उपलब्धता से जुडी समस्याओं का सामना कर रहा है। टायर इतर क्षेत्र के अधिकतर विनिर्माताओं को खरीद के चरण में गुणवत्ता परीक्षण की सुविधा नहीं है। साथ ही, विश्वास के आधार पर होने वाले व्यापार में गुणता मानकों का पालन न कर पाना बाद में कई परेशानियों का कारण बनेगा। इसलिए विपणन करने वाले रबड़ की गुणता सुनिश्चित करना और मूल्य निर्णय

में पारदर्शिता और वस्तुनिष्ठता का पालन करना उत्पादकों और उपभोक्ताओं को समान रूप से फायदेमंद होगा। इन सभी तथ्यों को ध्यान में रखते हुए ही प्राकृतिक रबड़ के लिए इलक्ट्रोणिक ट्रेडिंग प्लाटफोर्म विचार के साथ रबड़ बोर्ड आगे आया है।

अमर रहे ताकत हमारी

सी ई जयश्री
प्रयोगशाला सहायक

अमर रहे ताकत हमारी।
इस बुरी हालत पार करने में
मिलते है, नैतिक मूल्य आज हमें
दूर उठते है अहंकार दिल से हमारे।।

काट ली खाद्य श्रृंखला हम मानव,
प्रदूषित किया सब जलाशय
बहता पानी नदियों पर मिलाया
अभिशाप से मछलियां मारे गए ।।

फिर उनकी दृष्टि पड गयी वायु की ओर
हवा की संरचना बिगडा दिया
आज ऐसी परिस्थिति बनाई गई
मानव गूँगा और अंधा बन गया।।

प्रदूषण के बाद जल और वायु के,
देख लिया आकाश की ओर
प्रयोग किया परमाणु बम विस्फोट
पूरी दुनिया को पैरों के नीचे पकडा।।

आज बन गया है दुखी वो,
समझते है वो इस बडा सत्य,
सब प्राणियों की होती हैं यह दुनिया
एक जीव मात्र है मानव, ब्रह्मांड का।

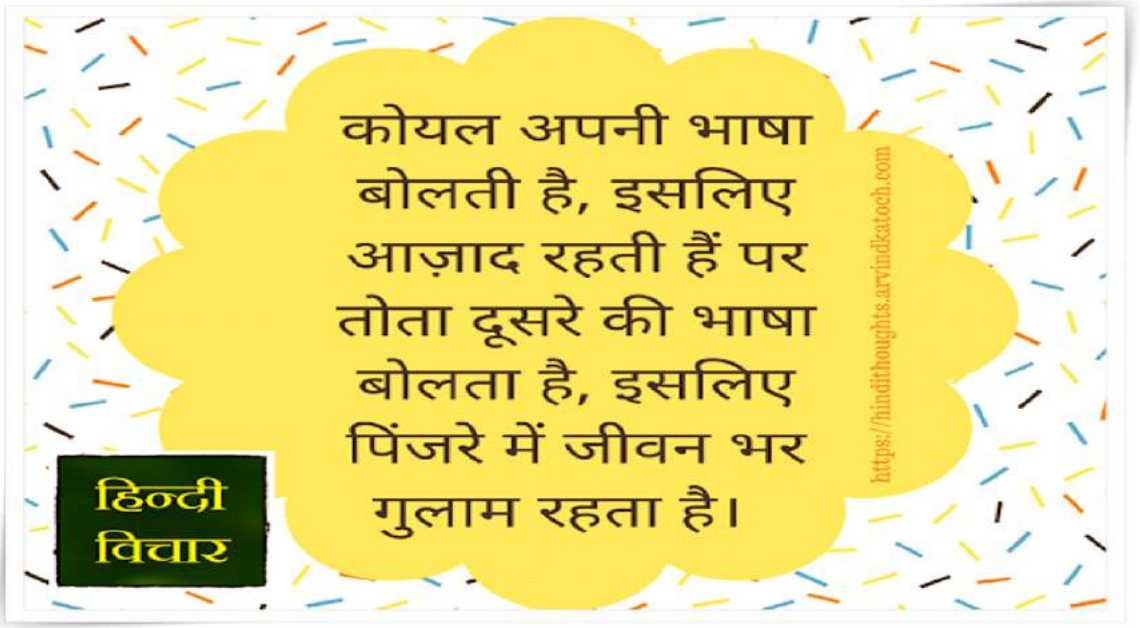

गुणवत्ता परीक्षण के लिए एनएबीएल मान्यता

रबड़ बोर्ड की केंद्रीय रबड़ काष्ठ परीक्षण प्रयोगशाला लगातार पंद्रहवें वर्ष में भी एनएबीएल मान्यता हासिल करने में सक्षम रही है। लेख में एनएबीएल मान्यता का महत्व और काष्ठ परीक्षण क्षेत्र में केंद्रीय काष्ठ परीक्षण प्रयोगशाला द्वारा दी जाने वाली सेवाओं पर प्रकाश डालता है।

जी उमाशंकर
फैक्टरी प्रबंधक (उ व अ)

आधुनिक काल में स्वास्थ्य, शिक्षा, सेवा, उत्पाद विनिर्माण, विपणन सहित किसी भी क्षेत्र में, गुणवत्ता को लेकर आम जनता के मन में कई चिंताएँ हैं। जनश्रुति, कल्पनाएं, व्यक्तिगत रुचियां, विज्ञापनों के आधार पर किसी भी विषय पर निर्णय लेना आसान नहीं है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी द्वारा समर्थित प्रायोगिक अवलोकन पर इस विषय में बहुत कुछ निर्भर किया जा सकता है। इसलिए किसी भी चीज़ का परीक्षण करके पुष्टि करने की रीति आम बात हो गई है। यह स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में सबसे अधिक देखा जाता है। पुराने ज़माने में बीमारी के निदान के लिए मात्र डॉक्टर के अनुभव पर भरोसा करना पडता था। आज रोगों की पुष्टि के लिए परीक्षण भी किए जाते हैं। खर्च अधिक होने पर भी सटीक निदान के लिए परीक्षणों पर भरोसा करने में हम संकोच नहीं करते है।

सभी क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी की सहायता से परीक्षण करके बात की पुष्टि करने की रीति आम बात हो गई है। सामग्री परीक्षण प्रयोगशालाएं इस युग में सबसे महत्वपूर्ण शाखा है। आज हमारे राष्ट्र की सामग्री परीक्षण श्रृंखला हमारे द्वारा उपयोग की जाने वाली किसी भी चीज़ की गुणवत्ता को परखने और सुनिश्चित करने में सक्षम है। ऐसी प्रणालियों के माध्यम से आयात-निर्यात क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने में सक्षम हुए हैं। किसी भी चीज़ के आयात के लिए उसकी गुणवत्ता सुनिश्चित करने वाले परीक्षण प्रमाणपत्र अनिवार्य है। यह सुनिश्चत करना महत्वपूर्ण है कि आयातित माल अच्छी गुणवत्ता का हो और देश के वाणिज्यिक हितों को नुकसान पहूंचाने वाले न हो। गुणवत्ता प्रमाणन के साथ निर्यात किए गए हमारे माल को अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार में बेहतर कीमत मिलेगी। इसके अलावा, गुणवत्ता संबंधी विवाद और सौदेबाजी से भी बच जाएगा।

स्वास्थ्य क्षेत्र के परीक्षण के बारे में उल्लेख किया था। लेकिन, हाल में यह खबर बाहर आयी थी कि एक मरीज को गलत परीक्षण परिणाम के आधार पर कीमो इलाज दिया गया था और उस मरीज को बुरा परिणामों का समाना करना पडा था। ऐसे संदर्भों के कारण परीक्षण करने वाली प्रणालियों की गुणवत्ता की भी जांच करके विश्वसनीयता सुनिश्चित करना आवश्यक बना है। जैसा कि पूरी दुनिया एक वैश्विक बाजार प्रणाली का हिस्सा बन गई है, परीक्षण के परिणामों के लिए सभी देशों द्वारा स्वीकार करने वाले एक सूचकांक आवश्यक बन गया। इसके लिए सूचकांक आईएसओ/आईईसी 17025/2017 है। इसके आधार पर हमारे राष्ट्र में गुणवत्ता के लिए अनुमोदन या मान्यता देने वाला एकमात्र संगठन है - केंद्र सरकार के अधीन कार्यरत नेशनल अक्रेडिटेशन बोर्ड फॉर टेस्टिंग एंड कालिब्रेशन लबोरटरीस। भारत की गुणवत्ता परिषद के एक कॉन्स्टिट्यूशनल बोर्ड है एनएबीएल। मेडिकल लैब, मेटीरियल टेस्टिंग

एन ए बी एल मान्यता प्रमाणपत्र डॉ के एन राघवन आई आर एस, अध्यक्ष एवं कार्यकारी निदेशक, रबड बोर्ड से संयुक्त निदेशक, श्री अरुमुगम पी प्राप्त कर रहे हैं

लैब, कैलिब्रेशन लैब, विशेषज्ञ परीक्षण प्रदाता, रेफरेन्स मेटीरियल विनिर्माताएं आदि के परीक्षण के प्रैद्योगिकी क्षमता संबंधी तीसरे पक्ष के मूल्यांकन सहित योग्यता, मान्यता आदि देने के उद्देश्य पर एन ए बी एल स्थापित है।

वर्तमान वैश्विक संदर्भ में एक राष्ट्र की अर्थ व्यवस्था में मान्य किसी भी उत्पाद या सेवा को व्यापक समीक्षा किए बिना दूसरे राष्ट्रों की अर्थ व्यवस्था में प्रचार व व्यापार करने के लिए स्वतंत्रता होगी। यह प्रक्रिया सुविधाजनक बनाने का यह उपाय है कि मान्यता प्राप्त कनफोर्मिटी असेसमेंट बॉडी की एक श्रेणी का सृजन करें और उनकी मान्यताओं से आपसी स्वीकृति बनाई जाए। इस संबंध में हमारे देश का प्रतिनिधित्व एन ए बी एल करता है, जो इस श्रृंखला की एक कडी है। इसके अलावा एन ए बी एल, अंतर्राष्ट्रीय प्रयोगशाला मान्यता निगम और एशिया पसफिक लबोरटरी अक्रडिटेशन कॉ ऑपरेशन के सदस्य और स्टाटस ऑफ सिग्नेटरी है ।

रबड़ बोर्ड के मांगानम में स्थित केंद्रीय काष्ठ परीक्षण प्रोयगशाला सबसे नवीनतम मानदंडों के अनुसार एन ए बी एल अक्रडिटेशन के लिए फिर से पात्र बनी। 2008-09 में एन ए बी एल द्वारा मान्यता प्राप्त केंद्रीय काष्ठ परीक्षण प्रयोगशाला देश के इस तरह की पहली प्रयोगशालाओं में एक है। पिछले 12 वर्षों से लगातार मान्यता बनाए रखनेवाली प्रयोगशाला की उपाधि भी अब केंद्रीय काष्ठ परीक्षण प्रयोगशाला को प्राप्त है। लकडी, प्लाइवुड, पैनल दरवाज़ा जैसे लकडी के उत्पादों में गुणवत्ता परीक्षण के लिए 40 से अधिक प्राचलों का विश्लेषण किया जाता है। इस संबंध में सटीकता ही केंद्रीय काष्ठ परीक्षण प्रयोगशाला को मान्यता बनाए रखने के लिए मददगार बना है।

लकडी के यांत्रिक परीक्षण के अलावा इस्तेमाल की गई लकडी के प्रकार की पहचान करने के लिए, रबड़ की लकडी में रासायनिक अवधारण और नमी की मात्रा का पता लगाने के लिए और काष्ठ संसाधन के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले रसायनों की गुणवत्ता सत्यापित करने के लिए परीक्षण केंद्रीय काष्ठ परीक्षण प्रयोगशाला में किए जाते हैं। ब्रिकेट, पैनल दरवाज़े, फ्लेश डॉर, मराइन प्लाइवुड, शटरिंग प्लाइवुड्स, पार्टिकल बोर्ड आदि के परीक्षण

केंद्रीय काष्ठ परीक्षण प्रयोगशाला - प्रशिक्षण के दौरान के दृश्य

सहित कई परीक्षण यहां किए जाते हैं। भारतीय रेल, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान,भारतीय प्रबंध संस्थान, केंद्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान जैसे कई संगठनों के लिए परीक्षण केंद्रीय काष्ठ परीक्षण प्रयोगशाला में किए जाते हैं। कई प्रमुख प्लाइवुड विनिर्माता अपने उत्पादों की गुणवत्ता का परीक्षण करने के लिए इस प्रयोगशाला का भरोसा करते हैं। जिन लोगों को संदेह हैं कि क्या उत्पादों के निर्माण के लिए निर्दिष्ट प्रकार की लकडी का उपयोग किया था और जिन्हें बिल के साथ प्रमाणपत्र की आवश्यकता हैं वे प्रयोगशला की सेवा के लाभ उठाते हैं।

परीक्षण संबंधी सेवाओं के अलावा केरल कृषि विश्वविद्यालय के सहयोग में बच्चों के लिए परियोजनाओं और अनुसंधान के लिए आवश्यक सूचनाएं भी प्रदान करती है। प्रयोगशाला, प्रशिक्षण और ज्ञान के प्रसार के लिए भी आवश्यक सेवाएँ प्रदान करती है। विविधीकरण के हिस्से के रूप में प्रबंधन प्रशिक्षण (आई एस ओ/आई ई सी 17025 से संबंधित), एनएबीएल मान्यता प्राप्त करने के लिए इच्छुक प्रयोगशालाओं के लिए आवश्यक सहायता भी प्रदान की जा रही हैं। केरल मेटल्स एन्ड मिनरल्स और रबर पार्क की प्रयोगशालाओं के लिए एनएबीएल मान्यता प्राप्त करने में केंद्रीय काष्ठ परीक्षण प्रोयगशाला ने सहायता की थी।

रबड संबंधी जानकारी

रबड बढती मिट्टी

मिट्टी के प्रकार

रबड खेतीवाले इलाके में मिट्टी आमतौर पर अत्यधिक विभिन्न प्रकार की होती है और इसमें अधिकतर लेटराइट, लेटरिटिक प्रकार की होती हैं। कुछ गैर-पारंपरिक क्षेत्रों में तलछटी प्रकार और गैर-लेटरिटिक लाल और जलोढ मिट्टी भी देखी जाती है। लेटेराइट और लेटरिटिक मिट्टी ज्यादातर बहुत झरझरा, अच्छी तरह से जल निष्कासित, मध्यम से अधिक तक अम्लीय, उपलब्ध फास्फोरस में कमी और भिन्न परिमाण में पोटेशियम और मैग्नीशियम संघटक वाली होती है। कुछ क्षेत्रों में पाई जाने वाली लाल मिट्टी में लाल रंग और भूरे रंग की महीन बनावट की विशेषता होती है। यह मिट्टी आमतौर पर अम्लीय है और उपलब्ध फास्फोरस में अत्यधिक कमी है।

मिट्टी की गहराई

रबड की खेती के लिए उपयुक्त कम से कम एक मीटर तक की गहराई में बिना किसी व्यवधानकारी हार्डपैन या अभेद्य परत की होनी चाहिए। पानी की परत भी एक मीटर निचली होनी चाहिए ताकि जड प्रवेश के लिए अवश्य रूप से कम से कम एक मीटर गहराई तक अच्छी वातनयुक्त मिट्टी उपलब्ध हो।

कोट्टयम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 40वीं बैठक

कोट्टयम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 40वीं बैठक कोविड - 19 महामारी के बढते प्रकोप के कारण ऑनलाइन के माध्यम से 20 अगस्त 2020 को सिस्को वेबेक्स द्वारा आयोजित की गई। डॉ के एन राघवन आई आर एस, अध्यक्ष नराकास एवं अध्यक्ष/कार्यकारी निदेशक, रबड़ बोर्ड ने बैठक की अध्यक्षता की। बैठक में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय से श्रीमती सुस्मिता भट्टाचार्या, उप निदेशक (रा भा का) ने प्रतिनिधित्व किया। सदस्य सचिव ने बैठक में भाग लिए अध्यक्ष एवं सभी सदस्य कार्यालयों के प्रमुखों/अधिकारियों का स्वागत किया। डॉ के.एन.राघवन, अध्यक्ष ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कोविड 19 की इस संकट अवस्था में भी राजभाषा कार्यान्वयन के लिए पर्याप्त ध्यान देने का आग्रह किया। उन्होंने याद दिलाया कि आगामी महीने में हिंदी दिवस मनाना है, राजभाषा विभाग द्वारा जारी दिशा निर्देशों का पालन करते हुए हिंदी दिवस/हिंदी पखवाडा समारोहों का आयोजन करना है। नराकास बैठकों में सदस्य कार्यालयों की उपस्थिति की अनिवार्यता पर भी उन्होंने जोर दिया।

राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि श्रीमती सुस्मिता भट्टाचार्या, उपनिदेशक (कार्या), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय ने बैठक में भाग लेते हुए सदस्य कार्यालयों की अर्धवार्षिक प्रगति रिपोर्टो का अवलोकन किया। रिपोर्टों का अवलोकन करते हुए उन्होंने बताया कि साझा समितियों का संचालन बहुत ही कठिन होता है। उन्होंने समिति के कार्य को सराहा। कई हिंदी अधिकारी और नराकासों के सदस्य सचिव क्षेत्रीय कार्यालयों से संपर्क में रहे और बैठक आयोजित करने की कठिनाइयों से अवगत कराया तथा ये कठिनाइयाँ, समस्याएं विभाग के ध्यान में लायी गयी। राजभाषा विभाग ने इस संकटकाल में भी कार्य जारी रखने के लिए मार्गदर्शन दिया और वीडियो कोनफेरन्सिंग द्वारा नगर समितियों की बैठकें आयोजित करने का मार्गदर्शन दिया। महोदया ने आगे बताया कि केरल राज्य इस मामले में बहुत आगे है, यह बहुत खुशी की बात है। केरल राज्य में ऑनलाइन द्वारा बहुत बैठकें आयोजित हो रही है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि बैठक में जरूर अधिक कार्यालय प्रमुख जुडे होंगे। पिछले दो महीने के अनुभव से लगता है कि ऑनलाइन बैठक की एक सकारात्मक बिंदु यह है कि अधिकतर कार्यालय प्रमुख बैठक में शामिल होते हैं।

श्री एम पी श्रीकुमार सहायक निदेशक (रा भा), भारत संचार निगम लिमिटेड ने कृतज्ञता ज्ञापित की।

मुख्यालय में स्वतंत्रता दिवस समारोह

राष्ट्र के **74वाँ स्वतंत्रता दिवस** समारोह शनिवार 15 अगस्त 2020 को रबड़ बोर्ड मुख्यालय में आयोजित किया गया। डॉ के एन राघवन आई आर एस, कार्यकारी निदेशक ने पूर्वाह्न 9.00 बजे रबड़ बोर्ड मुख्यालय में राष्ट्रीय झंडा फहराया। कार्यकारी निदेशक ने झंडा फहराने के बाद स्वतंत्रता दिवस संदेश भी दिया। कोविड-19 महामारी के संक्रमण के कारण केंद्र सरकार के दिशानिर्देश के अनुसार समारोह का आयोजन किया गया। इस वजह से मुख्यालय से सीमित सख्या में अधिकारी/कर्मचारी समारोह में भाग लिए।

हिन्दी साहित्य

हिंदी साहित्य सामान्य प्रश्नोत्तरी (उत्तर कोष्ठक में)

1. हिंदी का आदि कवि किसे माना जाता है? - **(स्वयंभू)**
2. आदिकाल के बाद हिंदी में किस साहित्य का उदय हुआ? - **(भक्ति साहित्य)**
3. निर्गुण भक्ति काव्य के प्रमुख कवि है ? - **(कबीरदास)**
4. किस काल को हिंदी साहित्य का स्वर्णकाल कहा जाता है? - **(भक्ति काल)**
5. आधुनिक काल का समय कब से माना जाता है ? - **(1900 से)**
6. जयशंकर प्रासद की सर्वश्रेष्ठ रचना कौन सी है? - **(कामायनी)**
7. कबीर किसके शिष्य थे ? - **(रामानंद)**
8. कलाधर उपनाम से कविता कौन से कवि लिखते थे ? - **(जयशंकर प्रसाद)**
9. प्रेमचंद के अधूरे उपन्यास का नाम है ? - **(मंगलसूत्र)**
10. रामचरित मानस का प्रधान रस है ? - **(शांत रस)**

सेवानिवृत्तियाँ - जुलाई 2020

श्री ए विजयन,
उप रबड़ उत्पादन आयुक्त

सेवानिवृत्तियाँ - अगस्त 2020

श्री पी के प्रसन्नन,
अभिलेखपाल/प्रयोगशाला परिचर

बाबु के जे,
कनिष्ठ रबड़ टापिंग प्रशिक्षण अधिकारी

सेवानिवृत्तियाँ - सितंबर 2020

श्रीमती उषा देवी आर,
विकास अधिकारी

श्री जोर्ज फ्रानसिस
कनिष्ठ रबड टापिंग
प्रशिक्षण अधिकारी

सेवानिवृत्तियाँ - अगस्त 2020

डॉ गिताली दास,
वरिष्ठ वैज्ञानिक

श्री इबोटोंबी सिंगा,
सहायक

स्वैच्छिक सेवानिवृत्तियाँ - सितंबर 2020

श्री राजगोपालन एम,
उप निदेशक (उत्पाद शुल्क)

श्री राजन एन के
विकास अधिकारी

सभी के सेवानिवृत्त जीवन मंगलमय हो!!!

अभिनव कोरोना

कविता

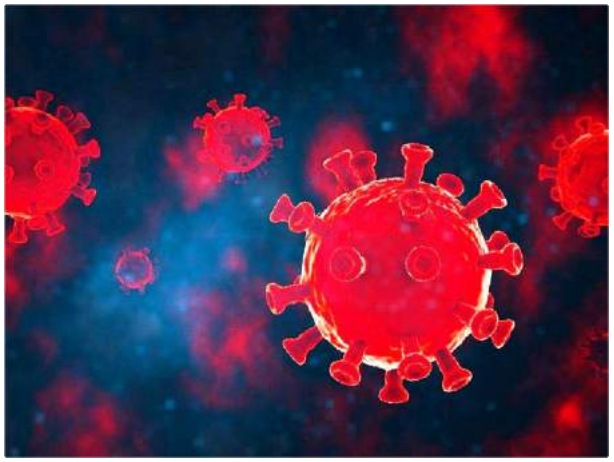

माधब महांकुड
स्टाफ कार चालक
रबड प्रशिक्षण संस्थान

जमाना बदल गया, जमीन पर हलचल मच गया।
बात क्या है, क्यों इतना हरकत है,
पता चला कि आया है कोरोना।

करिश्मा दिखाती, सबको डराती,
अजीब रोग है कोरोना।

छूने से पकडती छींकने से फैलती
सबको गले लगाती कोरोना।

महामारी है वो, सब को मारेगी,
भूत बनकर भूताणु है वो कोरोना।

पानी में तैरता नहीं हवा में घूमता नहीं,
अजीब चीज है कोरोना।

गला पकडता है फेफडों में बसता है,
बुखार है ये कोरोना।

कोरोना आया अच्छा ही हुआ,
हमें सिखाया कैसे जिंदगी जीना।

बच्चों के साथ, बूढे मां-बाप के साथ
और पत्नी से प्यार करना।

पराया कोई अपना नहीं,
अपनी जिंदगी ही संभालना,

सरल सादगी, शाकाहारी खाना,
भर पेट खाना को करो ना।

तला-भुना आदि परहेज करना,
मांस-मदिरा आदि को करो ना।

सुबह उठना, व्यायाम करना,
जडी बूटी काढा बनाकर पीना।

बाजार जाना भीड जुटाना,
यात्रा करना सबको करो ना।

संयम बरतना, आस्तिक होना,
खुद को बचाने का संकल्प लेना,
बाकी को करो ना।

कोरोना आया, सबक सिखाया,
अपना गर्व को खर्व किया।
विज्ञान बेचारा, अज्ञान हो गया।

प्रकृति का दोहन बंद हुआ,
सत्यमेव जयते, सार्थक हुआ।

आना जाना तो लगा रहता है,
एक न एक दिन जाना ही होगा
हम जीतेंगे और कोरोना

प्यारी कंगारू

(लघुकथा)

एम मंजुला
कनिष्ठ सहायक ग्रेड I
रबड़ बोर्ड मुख्यालय

कंगारू एक अनाथ आवारा स्त्री थी, जो अपना जीवन सडकों में बिताती थी, देशवासी नहीं जानते थे, वे कहां से आई या कौन सी भाषा बोलती, क्योंकि वह तो गूंगी थी।

कंगारू नाम तो उसे देश के किसी ने दिया था। इस के पीछे कारण भी हैं। वह एक चोली और धोती पहनती थी और धोती इस तरह पहनती थी और दो बिल्लियों को उस में डालती थी। जब बिल्ली बडी हो जाती वह शहर के किसी न किसी कोने से दूसरे का इंतज़ाम करती थी। शहर के होटल वाले उस को खाना देते थे और दूसरे किसी ने खाना दिया तो वह इनकार भी कर देती थी।

चित्ररचना: बिंदुमोल

उसका एक विचित्र विनोद भी था, वह पत्थर लेकर एक बिजली के पोस्ट पर बजा देती थी। पोस्ट तो लोहे से बना था, इसलिए पत्थर से बजाने पर ध्वनि भी होती थी। एक पोस्ट पर बजाने के बाद वह दूसरे पोस्ट की ओर जाती थी। शरारती लडके उसे छेडने के लिए पोस्ट पर बजाते थे, तब कंगारू नाराज़ हो जाती थी और उन्हें दौडा देती थी।

जब बबलू छोटी थी और खाना नहीं खाती थी तब दादी कंगारू का नाम लेती थी। कंगारू नाम सुनने से ही उसे डर था, क्योंकि कभी भी उसे देखते थे, उस के पेट से बिल्लियों की आंखें चमकते थी। वह तो छोटी होने से केवल इन आंखें देख पाती थी, न समझती थी कि कंगारू की धोती में बिल्ली है।

बडे होने से बबलू का जो भय था वह दया और प्यार के रूप में प्रकट होने लगा। कंगारू ज्यादा समय मंदिर के आसपास दिखाई देती थी, इसलिए बबलू को मंदिर जाना बहुत पसंद था। दुकान से कुछ खरीदना है तो बबलू तैयार होती और उस दुकान की ओर दौडती, जो मंदिर के निकट है। एक दोपहर को बबलू ने देखा कंगारू खाना खाती है और प्यार से अपने बिल्ली को भी खिलाती है। शायद लडकी होने के कारण बबलू की आंखों में आंसू भर आया होगा उस ने एक माँ का प्यार कंगारू में देखा।

शहर के दुकान के सामने जहां कंगारू रात को सोती थी, उस के पास एक म्युनिसिपल पाईप थी। रविवार के दिन दुकान बंद रहती थी तब वह अपने कपडे धोती सुखाने के लिए वहीं डाल देती थी। बबलू सोचती थी उसे यह कपडे कौन देते थे? और कई ऐसे सवाल थे उस का उत्तर न मिलते थे और बडी होकर भी नहीं मिला है।

बबलू कभी कभी उस शनिवार को याद करती है, जो दिन कभी नहीं भूल सकती है। उस दिन सुबह अपने दादी के साथ मंदिर जा रही थी, अचानक देखा दुकान के सामने कुछ लोग खडे हैं और पुलिस भी है। दौडकर देखने को मन करता था पर दादी ने हाथ पकडकर रखा वहाँ से कूद कर दुकान की ओर दौड पडी। दुकान के सामने पुलीस और कई लोग थे, उनके बीच से बबलू ने अंदर झांका, कंगारू की दो-तीन बिल्लियाँ रो रही थी, ऐसा रोना तो पहली बार सुना था। वे तो मिट्टी पर लेट कर इस तरह चेष्टा दिखाती थी मानो वे अपने मालकिन के बिदाई का दुख प्रकट कर रहे थे। कंगारू तो शांत होकर लेटी थी।

ऐसा क्यों?

ठीक सामने खडा होकर
मैंने एक चित्र देखा।
मुझे लगा कि चित्रस्थ पुरुष
मेरी ओर ही देख रहा।
पर दायीं ओर के मित्र ने कहा
ना, मेरी ओर ही देख रहा।
बोल उठा बायीं ओर का दोस्त
ना, ना, मेरी ही तरफ देख रहा।

मुझे विश्वास नहीं हुआ
दायें बायें हट कर देखा तो
मालूम हुआ कि दोनों का दावा सही था।
ऐसा क्यों? मैंने सोचा
और बहुतेरे चित्रों की जांच की
दायें बायें मुख फेरने वाले
नीचे की ओर आंखें नवाने वाले
ऊपर को दृष्टि उठाने वाले
झुकने वाले लेटने वाले
कई तरह के, कई पोस वाले चित्र।
उन में वह चमत्कार नहीं था
सब ओर से देखने वालों को वे ठीक न
ताकते।
आखिर मुझे मिला उस समस्या का हल,
एक निगूढ रहस्य गया खुल।
सीधा चित्र सब ओर बराबर देखता है
दूसरा एक ही तरफ।

हाँ,
पक्षापात रहित धीर ईमानदार आदमी
सीधे देखता है, स्थिर रहता है
और सब लोगों का आदर, विश्वास
लगातार अर्जित करता है।
प्रलोभन की ओर न मुडता

श्री कवियूर शिवराम अय्यर (स्व.)

धमकी के आगे न झुकता
सब लोग उसे अपनाते हैं
ऐसे पुरुष को हम नेता बनावें
अधिकारी बनावें, न्यायमूर्ति बनावें
ईश्वर वैसा ही है न?
सीधा खडा होता है,
हर कोने से देखने वालों पर
कृपादृष्टि बराबर डालता है।

किंतु कुछ मूर्ख दावा करते हैं
यह हमारा ईश्वर हैं, तुम्हारा नहीं
वे अकसर झगडा करते हैं
एक दूसरे का गला भी काटते हैं।

उन से मेरी विनती है
वे प्रभु को दूसरों के कोने से
देखने का प्रयास सब्र से करें।
तब सत्य उन्हें मालूम होगा
फिर सहिष्णुता से भाई-चारा निभा सकें।
मगर खबरदार!
ईश्वर को कुचलते नास्तिक कुछ होंगे।
वे सब को खतरनाक साबित होंगे।

अभियान 2020

खुद की टापिंग
कम खर्च अधिक आय

वर्तमान में रबड खेती क्षेत्र चुनौती पूर्ण समय से गुजर रहा है। हमेशा ही चुनौतियों से सफलता पूर्वक गुजरने का ही इतिहास रबड को है। हमारे रबड उत्पादन में 90 प्रतिशत लगभग 13 लाख संख्या के छोटे कृषकों की देन है। हमारे देश में लगभग 10 लाख टन रबड उत्पादित करने की क्षमता रखने वाले रबड बागान है। लेकिन वित्त वर्ष 2019-20 के दौरान हमारा उत्पादन मात्र 712000 मेट्रिक टन रहा। वर्धित उत्पादन लागत, कम भाव, जलवायु परिवर्तन, श्रमिकों की कमी जैसी विभिन्न कारणों से लगभग 24 प्रतिशत बागानों में टापिंग नहीं चल रही थी, यही उत्पादन में कमी का मुख्य कारण रहा। हमारे देशी उपभोग के लिए अपेक्षित रबड का उत्पादन देश में ही करने से ही आयात पर लगाम लगा सकते हैं और मूल्य में स्थिरता प्राप्त की जा सकती है। उत्पादकता वृद्धि, खर्च नियंत्रण, गुणवत्ता सुनिश्चित करना, सामूहिक गतिविधियाँ अपनाना आदि द्वारा प्रतियोगिताक्षमता हासिल करने से ही छोटे कृषक विद्यमान परिस्थितियों से उभर आ पाएंगे।

रबड कृषि क्षेत्र द्वारा सामना की जाने वाली मुख्य चुनौतियाँ

रबड खेती क्षेत्र द्वारा सामना की जाने वाली मुख्य चुनौती रबड भाव की गिरावट ही है। प्राकृतिक रबड के बीते 5 वर्षों का औसतन मूल्य प्रति कि ग्रा 127 रु. है। उससे पूर्व बाजार में कायम भाव का लगभग आधा। केवल रबड पर निर्भर छोटे कृषकों के आय और आजीविका का निर्धारण रबड भाव पर

ही होता है। दूसरी चुनौती उत्पादन लागत में हुई वृद्धि है। उत्पादन लागत का मुख्य हिस्सा केवल मजदूरी के लिए खर्च करने की स्थिति में लाभ का हिस्सा घट जाता है जिसने छोटे कृषकों को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। रबड के लिए अच्छे भाव प्राप्त करने के समय की मजदूरी ही अभी भी है। रबड की फसलन, कृषि गतिविधियाँ आदि पर रबड की कीमत के आधार पर ही कृषक निर्णय लेते हैं। रबड की कम कीमत की स्थिति मं फसलन सहित कृषि कार्य से बचने की प्रवृत्ति छोटे कृषकों के बीच है। भाव की गिरावट के साथ साथ उत्पादन लागत बढने से टापिंग दिनों की संख्या घटाने, खाद प्रयोग, पेडों का रखरखाव, वर्षारक्षण आदि से दूर रहने के लिए छोटे कृषक मजबूर हो गए। कृषकों द्वारा समाना की जाने वाली अन्य समस्या उत्पादकता में हुई कमी है। वयस्क पेडों की अधिकता, रबड बागानों की अवैज्ञानिक रखरखाव, फसलन पद्धतियों की त्रुटियाँ आदि इसके कारण है।

टापिंग लागत - उत्पादन लागत का मुख्य हिस्सा

केरल के रबड कृषकों के बीच चलाये सर्वेक्षण से पता चला है कि लगभग 60 प्रतिशत कृषक एकांतर दिन का टापिंग कराते है। लगभग

10 प्रतिशत कृषक हर दिन टापिंग करते हैं। लगभग 30 प्रतिशत कृषकों ने अधिक अंतराल की टापिंग रीतियां अपनायी हैं। तकनीकी रूप से कुशल टापरों का अभाव सब कहीं तो है लेकिन छोटे एवं सीमांत कृषकों के बीच भी रबड टापिंग के लिए मजदूरी पर टापरों को नियोजित करना आम बात है। रबड उत्पादन की लागत में 60 प्रतिशत से अधिक टापिंग मजदूरी के रूप में है। उत्पादन लागत को पार करने के लिए सक्षम तरीके से वैज्ञानिक कृषि विधियों द्वारा फसल सुधार करने और सभी संभव स्थानों पर खर्च कम करने से ही छोटे कृषक लाभकारी रूप से रबड खेती बरकरार रख पाएंगे।

निवल लाभ बढाने के लिए खुद की टापिंग

उत्पादन बढने और भाव घटने की स्थिति में श्रमिकों को काम पर लगाये रखने के लिए कृषक कई तरह की मुसीबतों का सामना कर रहे हैं। अनिवार्यता में ही श्रमिकों पर निर्भर करके तथा अपने बागानों में कृषि कार्य स्वयं करने से निवल लाभ काफी बढा सकते है। फसलन और प्रसंस्करण स्वयं कर सकें तो नवीन टापिंग विधियाँ अपने बागानों में प्रयोग में ला सकते हैं, उत्पाद की गुणवत्ता सुनिश्चित की जा सकते है, उत्पादन बढा सकते है, पेडों के आर्थिक जीवन काल बढा भी सकते हैं। साप्ताहिक टापिंग जैसी अधिक अंतराल की टापिंग प्रणालियाँ अपनाने से अन्य कार्यों के लिए पर्याप्त समय भी मिलेगा। कोविड-19 महामारी के कारण बेरोजगार बने और वापस आये लोगों और युवकों को आमदनी के लिए गर्व के साथ निर्भर करने योग्य काम है अपने बागान में खुद की टापिंग।

खुद की टापिंग और अधिक अंतराल वाली फसलन प्रणालियाँ

प्राकृतिक रबड क्षेत्र के गतिरोधों को पार करने के लिए सबसे उपयुक्त एक उपाय है अधिक अंतराल में खुद की टापिंग। अधिक उपजवाले किस्मों में तीन दिन में एक, चार दिन में एक, छः दिन में एक, साप्ताहिक टापिंग आदि बडे अंतराल वाली टापिंग विधियाँ अनुशंसित है। अधिक अंतराल की टापिंग प्रणालियाँ अपनाने पर फसल में कमी न होने के लिए प्रारंभ से ही उद्दीपक औषधियों का प्रयोग करना और वर्षा मौसम मे टापिंग में अवरोध न होने के लिए वर्षारक्षण भी करना चाहिए। टापिंग की मजदूरी घटायी भी जा सकती है। रबड पेडों के फसलन जीवनकाल बढेगा भी। रबड लाटेक्स का शुष्क रबड संघटक बढेगा और टापिंग पैनल शुष्कण घटेगा भी। इसके अलावा तने की अच्छी वृद्धि और काट के हटाने के वक्त अधिक भाव भी मिलेगा। खुद टाप करने वाले कृषक अधिक अंतराल वाली टापिंग प्रणालियों कों आसानी से बदल भी सकते हैं।

खुद की टापिंग करने वाले कृषकों के लिए व्यावहारिक अनुदेश

- अधिक अंतराल वाली टापिंग पद्धतियों में से अपने लिए उपयुक्त का चयन करें।
- सप्ताह में निर्धारित दिन टापिंग के लिए चुन लें और अन्य दिन घर के दूसरे काम के लिए प्रयुक्त करें।
- लाटेक्स निकालना, शीट निर्माण, शीट शुष्कण आदि कार्यों में परिवार के अन्य सदस्यों को भी सम्मिलित करें।
- रबड पेडों की संख्या 200 से अधिक होने की स्थिति में टापिंग, रबड प्रसंस्करण आदि कार्य मेहनत की और नीरस न होने के लिए बागान को छोटी इकाइयों में बांट दें।

बच्चों के लिए सिंपल पास्ता वाइट सॉस में

रसोई घर

आवश्यक सामग्रियाँ

पास्ता - 200 ग्राम
दूध - 400 ग्राम
मैदा - 2 टेबल स्पून
चीज़ - 75 ग्राम
हरी मिर्च - 1 नं.
गाजर - आधा (बारीक कटा हुआ)
कैप्सिकम - आधा (बारीक कटी हुई)
लहसुन - एक टीस्पून बारीक कटा हुआ
ओरिगानो - 1/2 स्पून
बेसल सीसनिंग - 1/2 स्पून
मक्खन - 2 टेबल स्पून
काली मिर्च पाउडर - 1/4 स्पून
चिल्ली फ्लेक्स - 1/4 स्पून
नमक - स्वादानुसार
वेजटबल ऑयल - 1 टेबल स्पून

तैयार करने की विधि

1. सबसे पहले बर्तन में पानी डालकर पास्ता, नमक और एक स्पून वेजटबल ऑयल डालकर 10 मिनिट तक उबालें, फिर छान ले और साईड में रख दे।
2. गैस में एक पैन रखकर उसमें एक स्पून बटर डालकर लहसुन, गाजर, कैप्सिकम, थोडा नमक और काली मिर्च डालकर लगभग 2 मिनिट तक भूने और साईड में रख दे।
3. गैस में एक पैन रखकर एक स्पून बटर डालकर मेल्ट होने पर उसमें मैदा डालकर धीमी आंच में अच्छे से मिलाए (एक मिनिट तक) और रंग बदलने के पहले उसमें दूध डालकर अच्छी तरह मिलाए। अब इसमें चीस ग्रेट करके डाल सकते है। इसमें भुनी हुई सब्जियां और पास्ता डाल दें। ओरिगानो और बेसल डालकर अच्छी तरह मिलाए। नमक चाहिए तो डाल सकते है। फिर उसमें चिली फ्लेक्स डाल दें। हमारी टेस्टी पास्ता तैयार हो गयी है, चाहिए तो और चीज डाल सकते है। इसे गर्मा गरम परोसे।

रबड संबंधी जानकारी

फसल संग्रहण

एक रबड बागान से मुख्य फसल लाटेक्स, पानी में रबड का एक दूधिया सफेद फैलाव है, जो टापिंग प्रक्रिया द्वारा निकाला जाता है। टापिंग के दो से तीन घंटे बाद, कप में एकत्रित लाटेक्स को एक साफ बाल्टी में अंतरित किया जाता है। रबड बागान से लगभग 70-80 प्रतिशत फसल लाटेक्स के रूप में होती है।

लाटेक्स जो टैपिंग पैनल (ट्री लेस) में और संग्रहण कप (कप गांठ) में जम जाता है, वह भी फसल का हिस्सा बन जाता है और टैपिंग से ठीक पहले एक टोकरी में टैपर द्वारा जिसका एकत्रण किया जाता है। लाटेक्स जो बहकर या छलकर जमीन पर गिर जाता है तथा जब सूख जाता है तो, जिसे महीने में एक बार स्क्रैप के रूप में भी इकट्ठा किया जाता है। इन्हें एकसाथ फील्ड कोयागुलम कहा जाता है।

लाटेक्स और फील्ड कोयागुलम जीवाणु प्रतिक्रिया के प्रति अतिसंवेदनशील होते हैं और इसलिए सुरक्षित भंडारण और विपणन योग्य रूपों में संसाधित करना आवश्यक है।

रबड खेती में ड्रॉन की संभाव्यताएं

बी प्रदीप
भारतीय रबड अनुसंधान संस्थान

डॉ जेइम्स जेकब
भारतीय रबड अनुसंधान संस्थान

कृषि क्षेत्र की विभिन्न आवश्यकताओं के लिए कई देशों में ड्रॉनों को प्रयुक्त किया जाता है। ड्रोनों से संबंधित तकनीकी जानकारियाँ, भारत में ड्रॉनों के उपयोग करते वक्त अनुपालन करने के नियंत्रण और नीतियाँ, ड्रॉनों के व्यावहारिक उपयोग, रबड खेती में ड्रॉनों की संभाव्यताएं आदि संबंधी जानकारी कृषि क्षेत्र से जुडे लोगों को होना बेहतर होगा।

ड्रॉन

ड्रॉनों में उन्नत सुदूर संवेदी प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जाता है। रिमोटों की सहायता से प्रचालित होने के कारण मानव रहित वायु यान का विशेषण भी ड्रॉनों को दिया जाता है। आम तौर पर स्वतः नियंत्रण सुविधा के साथ या मानव द्वारा दूरस्थ स्थित नियंत्रण सुविधा में ड्रोनों का प्रचालन होता है। मुख्य रूप से तीन तरह के ड्रॉन होते हैं- घूमने वाले पंख युक्त, स्थिर पंखयुक्त, छिडकाव के लिए प्रयुक्त। विशेष रूप से रूपायित करके लगाये गये अधुनाधुन कैमरा, संवेदक, वैश्विक स्थान निर्धारण प्रणाली आदि की सहायता से ड्रॉन जानकारियों का

घूमते पंखवाले ड्रॉन

बडा ड्रॉन

मध्यम आकार ड्रॉन

माइक्रो ड्रॉन

मल्टी स्पेक्ट्रल ड्रॉन

संग्रहण करते हैं। संवेदकों की सहायता से संग्रहित जानकारियाँ सोफ्टवेयरों की सहायता से विश्लेषण करके तरह-तरह के अध्ययन चलाये जा सकते हैं। प्रत्येक अध्ययन की आवश्यकता के लिए अलग अलग सीमाओं के बहु स्पेक्ट्रमी, हैपर स्पेक्ट्रमी आदि संवेदक उपलब्ध हैं। सीमा का मतलब है नियंत्रण करने वाले व्यक्ति से कितनी दूरी तक अनुदेश स्वीकार करने तथा जानकारियाँ वापस भेजने की क्षमता है। इसीलिए ही सटीक जानकारियाँ प्राप्त करने के लिए ड्रॉनों का उपयोग व्यापक रूप से किया जाता है। भारतीय कृषि क्षेत्र में भी ड्रॉनों का उपयोग व्यापक रूप से करने लगा है।

ड्रॉनों के उपयोग संबंधी नीतियां और नियंत्रण

फरवरी 2019 तक उपलब्ध आंकडों के अनुसार वैश्विक स्तर पर 97 राष्ट्रों ने ड्रॉनों के उपयोग के संबंध में अपनी नीतियां रूपायित की है। 12 राष्ट्रों में ड्रॉनों का उपयोग रोक दिया है। बाकी राष्ट्रों में ड्रॉनों के उपयोग पर विशेष नियंत्रण नहीं है। ड्रॉनों से संबंधित बातें विमानन मंत्रालय के अधीन आती हैं। उनके उपयोग करते वक्त ध्यान देने संबंधी नीतियां भारत सरकार ने रूपायित की है। भारत में ड्रॉनों का उपयोग अनुसंधान आदि के लिए करने हेतु कोई नियंत्रण तो नहीं है फिर भी व्यापक नियमों का अभाव एक बाधा रही। लेकिन वर्तमान में ड्रॉनों के उपयोग करने पर अपनाने के नियंत्रणों के संबंध में भारत के नागरिक विमानन महानिदेशक द्वारा नागरिक विमानन अपेक्षाएं नाम से जारी सुव्यवस्थित मार्गदर्शन लागू है। इसके अनुसार ड्रॉनों को उनके वजन के अनुसार पाँच वर्गों में वर्गीकृत किया है, 250 ग्राम तक वजन वाले नानो ड्रॉन, 250 ग्रा. से 2 कि ग्रा. तक वजन वाले माइक्रो ड्रॉन, 2 से 5 कि ग्रा. तक वजन वाले छोटे ड्रॉन, 25 से 50 कि ग्रा. तक वजन वाले मध्यम ड्रॉन और 50 कि ग्रा. से अधिक वजन वाले बडे ड्रॉन। इसमें नानो श्रेणी को छोडकर अन्य श्रेणियों के ड्रॉनों के प्रचालन के लिए नागर विमानन महानिदेशालय का पंजीयन और विशिष्ट पहचान

नानो ड्रॉन

छोटे आकार का ड्रॉन

संख्या आवश्यक है। ड्रॉनों के प्रत्येक उडान के लिए डिजिटल स्काई प्लाटफोर्म द्वारा अनुमति प्राप्त करने की आवश्यकता है। ड्रॉनों का उपयोग नहीं करने का स्थान, प्रचालन करने की अनुमति वाली दूरी सीमा, वाणिज्यक तरीके से प्रयोग करने पर ध्यान देने की बातें आदि संबंधी अधिक जानकारी नागर विमानन महानिदेशालय द्वारा जारी मार्गदर्शन में व्यक्त की है। अध्ययन एवं शोध के लिए ड्रॉनों के उपयोग करने हेतु सहायक होनेवाले तरीके से इन मार्गदर्शनों को अद्यतन किया है। कृषि क्षेत्र सहित सभी क्षेत्रों के लिए यह लाभकारी होगा।

ड्रॉनों के उपयोग

साधारणतया ड्रॉनों का उपयोग रक्षा क्षेत्र की आवश्यकताओं के लिए होता था। लेकिन आजकल शादी जैसे कार्यों में प्रयुक्त किए जाने वाले ड्रॉन सबको परिचित है। सामान्य कैमरा लदे हुए यह ड्रॉन मनोरंजन और चलचित्रण के लिए प्रयुक्त किया जाता है। लेकिन कृषि क्षेत्र के अध्ययन, शोध, निगरानी आदि के लिए प्रयुक्त ड्रॉन के संवेदक विशेष रूप से रूपायित और अधिक सूचनाएं एकत्रित करने के लिए उपयुक्त होते हैं। इस तरह के ड्रॉन प्रयुक्त करके सूचनाओं के एकत्रण और विश्लेषण के लिए विशेष प्रशिक्षण प्राप्त करने की आवश्यकता है। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत फसलों के विस्तार एवं उपज आंकने के लिए भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ड्रॉनों का उपयोग कर रहा है। केरल राज्य कृषि विभाग ड्रॉनों का प्रयोग करके कीटनाशकों का प्रयोग, खाद प्रयोग आदि का प्रायोगिक परीक्षण कर रहे हैं। कासरगोड के केंद्रीय बागवानी फसल अनुसंधान संस्थान ने सुपारी बागानों में कीटनाशकों के प्रयोग के लिए ड्रॉनों का उपयोग किया है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के अधीन कार्यरत उत्तरपूर्वी अंतरिक्ष अनुप्रयोग केंद्र ड्रॉनों का उपयोग करके कई तरह के अध्ययन चलाते हैं तथा प्रशिक्षण दे रहा है। चट्टान गिरना, फसल नुकसान मूल्यांकन, भूमि के उपरितल का त्रिविम दृश्यन, नमूना निर्माण, नगर आयोजन आदि के लिए उत्तर पूर्वी अंतरिक्ष अनुप्रयोग केंद्र ड्रॉनों का उपयोग कर रहे हैं। फसलों के कीट प्रकोप, ड्रॉनों की सहायता से समझ सकते हैं। बाढ, भूकंप आदि से होने वाले नुकसान का जल्द जायजा लेने के लिए ड्रॉनों का उपयोग किया जा सकता है। इसके अलावा नारियल जैसी फसलों की गिनती तेल ताड बागानों के कीट प्रकोप की पहचान, वन दखल, भू उपयोग सर्वेक्षण, जंगली जानवरों का सर्वेक्षण आदि के लिए ड्रॉनों का उपयोग किया जाता है। ड्रॉनों का उपयोग तो अनेक है लेकिन उनके प्रचालन करने के स्थानों में नियंत्रण है। यही ड्रोनों के उपयोग की सीमा है।

रबड कृषि क्षेत्र में ड्रॉनों की संभाव्यताएं

रबड खेती के अधीन क्षेत्र के मानचित्र तैयार करने आदि के लिए रबड बोर्ड सफल रूप से उपग्रह सुदूर संवेदी प्रौद्योगिकी का उपयोग कर

छिडकाव में प्रयुक्त ड्रॉन

रहा है। एक छोटे इलाके की सटीक सूचनाएं देने में उपग्रह सुदूर संवेदी प्रौद्योगिकी को सीमाएं है। लेकिन छोटे इलाकों की सटीक सूचना एकत्रण में ड्रॉन बहुत फलदायक है। तीन वर्ष से कम उम्र के रबड बागानों के मानचित्रण के लिए ड्रॉनों का उपयोग अधिक सफल हो सकता है। ड्रॉन प्रयुक्त करके रबड बागानों की सही परिधि आंकी जा सकती है। रबड पेडों की गिनती के लिए भी ड्रॉनों का परीक्षण

किया जा सकता है। फसलों में कीट नियंत्रण के लिए ड्रॉनों का उपयोग किया जाता है। रबड बागानों के कीट प्रकोप के लिए दवाई के छिडकाव हेतु इनका प्रयोग किया जा सकता है। रबड पत्तों को ग्रसित करने वाले ओयिडियम पत्ता रोग ग्रस्त पेडों की पहचान के लिए मलेशियन रबड बोर्ड और मलेशिया विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय ने ड्रॉन प्रौद्योगिकी का उपयोग किया है। उसी तरह पेडों की ऊँचाई नापने के लिए ड्रॉन, लिडार आदि प्रौद्योगिकियों का उपयोग किया जा रहा है। रबड खेती में ड्रॉनों की ऐसी संभाव्यताएं निहित तो हैं लेकिन प्रायोगिक तौर पर अध्ययन करने के बाद की सही जानकारी प्राप्त होगी।

तकनीकी जानकारी किसी भी क्षेत्र के विकास के लिए सहायक है। कृषि क्षेत्र में मशीनीकरण अनिवार्य बनने वाले इस युग में रबड खेती में भी ड्रॉन जैसी नवीन सुविधाओं का उपयोग प्रायोगिक तौर पर किया जा सकता है।

अंतरिक्ष विज्ञान और भारत

शांता कर्मकार
कनिष्ठ सहायक ग्रेड I
प्रादेशिक अनुसंधान स्टेशन, अगर्तला

वर्तमान युग अंतरिक्ष और कंप्यूटर का युग है। हम किसे अंतरिक्ष कहते है? वस्तुत: वह सारा आकाश और इसका असीम अबाध विस्तार ही अंतरिक्ष है। न इसका कहीं आरंभ है न अंत। अंतरिक्ष वास्तव में एक सत्य है जो सभी जगह मौजूद है, जिसका निरंतर विस्तार हो रहा है।

धरती पर जनसंख्या बढती जा रही है। जनसंख्या बढने के साथ साथ मनुष्य की कई प्रकार की समस्याएं बढती जा रही है। हो सकता है एक समय ऐसा आए जब धरती पर रहने की जगह न हो।

इसलिए वैज्ञानिकों ने यह पता लगाना शुरू किया कि क्या धरती के अलावा भी कोई अन्य ग्रह या उपग्रह पर रहने की शुरूआत की जा सकती है। इस दिशा में सभी बडे बडे देश की वैज्ञानिकों ने कोशिश शुरू की। भारत भी इस कोशिश में उल्लेखनीय प्रयास कर रहा है।

भारत में तिरुवनंतपुरम के पास तुंबा नामक स्थान पर सन् 1963 में रॉकेट लॉन्चिंग स्टेशन स्थापित किया गया। इसी साल से अमरीका द्वारा बनाया गया रॉकेट छोडा गया। अंतरिक्ष विज्ञान पर व्यवस्थित रूप से काम करने के लिए सन् 1969 में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) का गठन किया गया। इसके बाद सन् 1972 में भारत सरकार ने अंतरिक्ष विज्ञान तथा अंतरिक्ष आयोग की स्थापना भी की ।

इन सभी प्रयत्नों के फलस्वरूप 7 जून 1979 को भारत को अपना उपग्रह अंतरिक्ष यान के जरिए अंतरिक्ष विजय की पहली उपलब्धि भी मिली। इसके बाद 1981 में रोहिणी तथा एप्पल उपग्रह

श्रीहरिकोट्टा नामक स्थान से छोडे गए।

1982 में उपग्रह ए एफ एस पी सी और 1988 में आर एस1 अंतरिक्ष में छोडे गए। 1984 में भारत के राकेश शर्मा ने अंतरिक्ष की यात्रा की और दिवंगत कल्पना चावला के दो बार की अंतरिक्ष यात्रा भारत के लिए गौरव की बात रही है।

चंद्रयान -1 ऑर्बिटर का मून इम्पैक्ट प्रोब 14 नवंबर 2008 को चंद्र सतह पर उतरा। जिससे भारत चंद्रमा पर अपना झंडा लगाने वाला चौथा

देश बन गया।

चंद्रयान 1 के बाद भारत का दूसरा चंद्र अन्वेशन अभियान है, जिसे भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने विकसित किया है। अभियान को जीएसएलवी संस्करण 3 प्रक्षेपण यान द्वारा प्रक्षेपित किया गया। इस अभियान में भारत में निर्मित एक चंद्र कक्षयान, एक रोवर एवं एक लैंडर शामिल है। इन सबका विकास इसरो द्वारा किया गया है। भारत ने चंद्रयान 2 को 22 जुलाई 2019 को श्रीहरिकोट्टा रेंज से भारतीय समयानुसार 02.43 अपराह्न को सफलतापूर्वक प्रक्षेपित किया।

अन्य आकाशीय ग्रहों जैसे बृहस्पति, शनि, शुक्र, मंगल आदि पर मानव को उतारने के भागीरथ प्रयत्न चल रहे हैं। इस संबंध में कई मानव रहित अंतरिक्ष यान रूस और अमेरिका ने अब तक आकाश में भेजे हैं। मानव निरंतर प्रयास में हैं कि उस अंतरिक्ष में कौन पहले जाएगा। जैसे-जैसे उसका अंतरिक्ष ज्ञान आगे बढता है, उसकी जिज्ञासा और भी बढती जाती है।

भारत भी अंतरिक्ष अनुसंधान और अन्वेषण में लगा हुआ है। शुरू से लेकर आज तक भारत ने अनेक उपग्रह अंतरिक्ष में छोडे हैं, जिनसे न केवल अंतरिक्ष में होने वाले घटनाओं की पूर्व सूचना हमें मिलती रहती है बल्कि पृथ्वी पर होने वाले परिवर्तनों, मौसम की जानकारी, इंटरनेट, फोन आदि सुविधाओं के साथ अनेक प्रकार के वैज्ञानिक प्रयोग भी किए जाते हैं और जीवन को अधिक से अधिक सुविधाजनक बनाने की कोशिश की जाती है।

भारत को आज़ादी पाए इतने समय ही हुए है, किंतु भारत आज अंतरिक्ष विजय के कारण विश्व के सभी बडे देशों के समान उन्नत कहलाने लायक बन चुका है।

हिंदी कहावत

कम शब्दों में बडी बात

अधजल गगरी छलकत जाय

अर्थ- जिस व्यक्ति के पास कम ज्ञान होता है, वह अपने आप को, ज्यादा विद्वान होने का दिखावा करता है।

अपना रख पराया चख

अर्थ- अपनी चीजों को संभल के रखना और दूसरे की चीजों का इस्तेमाल करना।

हिंदी दिवस समारोह

प्रादेशिक कार्यालय काजलगांव में 30 सितंबर 2019 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्री प्रबिन राभा, सहायक सचिव ने स्वागत भाषण किया। श्रीमती षैनी के पोन्नन, सहायक विकास अधिकारी ने समारोह की अध्यक्षता की। श्री ओम प्रकाश पाठक, सहायक अध्यापक, केंद्रीय विद्यालय, बोनगाईगांव प्रतियोगिताओं में निर्णायक रहे। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - रिदिप चौधरी, क्षेत्रीय अधिकारी

द्वितीय - रीना टेरन, सहायक

तृतीय - षीला एल, स.वि. अधिकारी

II. कवितापाठ

प्रथम - षीला एल, स.वि. अधिकारी

द्वितीय - देबज्योति चक्रवर्ती, स.वि.अधिकारी

तृतीय - आनंद लामा, क्षेत्रीय अधिकारी

प्रादेशिक कार्यालय श्रीकंठापुरम में 03 अक्तूबर 2019 को हिंदी दिवस मनाया गया। श्रीमती जयंती, अध्यापिका, गवर्नमेंट एच एस एस प्रतियोगिताओं में निर्णायक रही। इस सिलसिले में विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताएं आयोजित कीं। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - वर्षा टी एम, क.स.ग्रेड 1

द्वितीय - आन्सी टी के, क्षेत्रीय अधिकारी

तृतीय - जयराजन पी, स्टाफ कार चालक

II. भाषण

प्रथम - संध्या पी आर, क.सहायक ग्रेड 1

द्वितीय - जयराजन पी, स्टाफ कार चालक

तृतीय - वर्षा टी एम, क.स.ग्रेड 1

III. कवितापाठ

प्रथम - गिरीष कुमार सी पी, सहायक

द्वितीय - जयराजन पी, स्टाफ कार चालक

तृतीय - जेसी जोसफ, स. वि. अधिकारी

प्रादेशिक कार्यालय बारिपदा में 30 सितंबर 2019 को हिंदी दिवस मनाया गया। श्रीमती डॉ बसंत कुमार दास, वरिष्ठ हिंदी अध्यापक, केंद्रीय विद्यालय, बारिपदा प्रतियोगिताओं में निर्णायक रहे। इस सिलसिले में विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताएं आयोजित कीं। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - शक्तिनाथ सत्पथी, क्षेत्रीय अधिकारी

द्वितीय - सुरेष चंद्र साहू, सहायक
तृतीय - इलिसन बाईपाई, अनुभाग अधिकारी

II. कवितापाठ

प्रथम - सुशांत कुमार नाइक, स.वि.अधिकारी
द्वितीय - शक्तिनाथ सत्पथी, क्षेत्रीय अधिकारी
तृतीय - इलिसन बाईपाई, अनुभाग अधिकारी

प्रादेशिक कार्यालय तिरुवनंतपुरम में 04 अक्तूबर 2019 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्रीमती हिक्की देवदास, सहायक प्रोफेसर, सरकार प्रशिक्षण कॉलेज, तिरुवनंतपुरम प्रतियोगिताओं में निर्णायक रही। श्री हरिकुमार के एन, विकास अधिकारी ने समारोह में स्वागत भाषण किया। के मोहन कुमार, प्रभारी उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह की अध्यक्षता की। के हरिकुमार, विकास अधिकारी, एम अजयकुमार अनुभाग अधिकारी और मनोजकुमार एम प्रबंध निदेशक, पोनमुडी रबेर्स भी मंच पर उपस्थित थे।

कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती
प्रथम - जयकुमार ए आर, सहायक
द्वितीय - बिंदु पी क्षेत्रीय अधिकारी
तृतीय - मिनी नायर एस, क.सहायक ग्रेड 1

II. निबंध लेखन

प्रथम - मेरिकुट्टी पी जोर्ज, सहायक
द्वितीय - बिंदु पी क्षेत्रीय अधिकारी
तृतीय - मिनी नायर एस, क.सहायक ग्रेड 1

III. भाषण

प्रथम - प्रिया वर्मा, क्षेत्रीय अधिकारी
द्वितीय - विनोद टी, क.सहायक ग्रेड 1
तृतीय - जयकुमार ए आर, सहायक

IV. कवितापाठ

प्रथम - प्रिया वर्मा, क्षेत्रीय अधिकारी
द्वितीय - अजयकुमार एम, अनुभाग अधिकारी
तृतीय - कोमलम पी, सहायक

प्रादेशिक कार्यालय अंबासा में 01 अक्तूबर 2019 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्री बुधी प्रकाश, हिंदी अध्यापक, केंद्रीय विद्यालय, अंबासा प्रतियोगिताओं में निर्णायक रहे। श्रीमती गिरिजामणी के ए, प्रभारी संयुक्त रबड़ उत्पादन आयुक्त, एन आर ई टी सी ने समारोह की अध्यक्षता की। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I. भाषण

श्री/श्रीमती
प्रथम - निषा वर्मा, क्षेत्रीय अधिकारी
द्वितीय - प्रसेनजीत मलाकर, क.सहायक ग्रेड I

तृतीय - राणा बर्मा, आशुलिपिक ग्रेड II

II. कवितापाठ

प्रथम - निषा वर्मा, क्षेत्रीय अधिकारी
द्वितीय - राणा बर्मा, आशुलिपिक ग्रेड II
तृतीय - रंजित देब बर्मा, सर्वेक्षण निरीक्षक

प्रादेशिक कार्यालय कोषिक्कोड में 27 सितंबर 2019 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्री उमेश, हिंदी अधिकारी, पुलीस विभाग प्रतियोगिताओं में निर्णायक रहे। श्री राजीव सी एन, विकास अधिकारी ने समारोह की अध्यक्षता की। श्री रामचंद्रन पी के, विकास अधिकारी ने स्वागत भाषण किया। श्री जमाल के के, क्षेत्रीय अधिकारी ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - प्रेमी पी, सहायक

द्वितीय - जयश्री कुट्टाडन, सहायक

तृतीय - सतीशकुमार के सी, अनुभाग अधिकारी

II. भाषण

प्रथम - जमाल के के, क्षेत्रीय अधिकारी

द्वितीय - सतीशकुमार के सी, अनुभाग अधिकारी

तृतीय - सुलैमान टी पी, कनिष्ठ सहायक

III. कवितापाठ

प्रथम - जयश्री कुट्टाडन, सहायक

द्वितीय - सान्टी जोसफ, कनिष्ठ सहायक

तृतीय - सतीशकुमार के सी, अनुभाग अधिकारी

एनआरईटीसी अगर्तला में 27 सितंबर 2019 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्री राकेश कुमार पांडे, हिंदी अध्यापक, केंद्रीय विद्यालय, कुंजबान, अगर्तला प्रतियोगिताओं में निर्णायक रहे। श्री श्यामल सेन, विकास अधिकारी ने स्वागत भाषण किया। श्रीमती गिरिजामणी के ए, प्रभारी संयुक्त रबड़ उत्पादन आयुक्त और डॉ सुशील कुमार डे, संयुक्त निदेशक ने अपने वक्तव्य में हिंदी समारोह के आयोजन की प्रासंगिकता के बारे में बताया। प्रादेशिक कार्यालय, अगर्तला, प्रादेशिक अनुसंधान स्टेशन, अगर्तला, एनआरईटीसी अगर्तला, मणिमलयार रबेर्स और त्रिपुरा लाटेक्स के संयुक्त रूप से आयोजित हिंदी दिवस समारोह में इन कार्यालयों के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - शांता कर्मकार, कनिष्ठ सहायक ग्रेड I

द्वितीय - ब्रजेष कुमार मेहरा, वैज्ञानिक सहायक

तृतीय - बिकास शर्मा, सहायक

II. निबंध लेखन

प्रथम - शांता कर्मकार, कनिष्ठ सहायक ग्रेड I

द्वितीय - रत्ना नाथ, कनिष्ठ सहायक ग्रेड I

तृतीय - ब्रजेष कुमार मेहरा, वैज्ञानिक सहायक

III. भाषण

प्रथम - चित्तरंजन देबनाथ, कनिष्ठ अभियंता (सि)

द्वितीय - सुकल्याण दत्त गुप्ता, क्षेत्रीय अधिकारी

तृतीय - ब्रजेष कुमार मेहरा, वैज्ञानिक सहायक

IV. कवितापाठ

प्रथम - रत्ना नाथ, कनिष्ठ सहायक ग्रेड I

द्वितीय - बिकास शर्मा, सहायक

तृतीय - ब्रजेष कुमार मेहरा, वैज्ञानिक सहायक

V. हिंदी गीत

प्रथम - शांता कर्मकार, कनिष्ठ सहायक ग्रेड I

द्वितीय - सुदीप कुमार चक्रबर्ती, स.विकास अधिकारी

तृतीय - रत्ना नाथ, कनिष्ठ सहायक ग्रेड I

प्रादेशिक कार्यालय पालक्काड में 25 सितंबर 2019 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्री एन सोमसुंदरन, अध्यापक (सेवानिवृत्त), जी एचएस एस बिग बाजार, पालक्काड प्रतियोगिताओं में निर्णायक रहे। श्रीमती के के कमलाक्षी, विकास अधिकारी ने समारोह की अध्यक्षता की। श्री कुरुविला चेरियान, सहायक विकास अधिकारी ने कृतज्ञता ज्ञापन किया। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - पार्वती एम पी, सहायक

द्वितीय - पी रजनी, सहायक

तृतीय - वी ए कृष्णप्रसाद, सहायक विकास अधिकारी

II. निबंध लेखन

प्रथम - पार्वती एम पी, सहायक

द्वितीय - पी रजनी, सहायक

तृतीय - नसीफ ए यु, कनिष्ठ सहायक ग्रेड I

III. भाषण

प्रथम - कुरुविला चेरियान, स. विकास अधिकारी

द्वितीय - नसीफ ए यु, कनिष्ठ सहायक ग्रेड I

तृतीय - गोपिनाथन वी, सहायक

चुटकुले

सयानी माँ

श्रीमती ढब्बूजी : आपकी माँ ने मेरा घोर अपमान किया है।

ढब्बूजी : वह कैसे?

श्रीमती ढब्बूजी : यह पत्र देखो। यह उन्होंने आपके नाम लिखा है। मैंने फाडकर पढा तो...

ढब्बूजी : तो?

श्रीमती ढब्बूजी : अंत में लिखा है–कृपया यह पत्र अपने पति को देना न भूलना।

गाय और मौसम

ढब्बूजी : समझो, मुन्ने! मौसम का पता गायों से लगाया जाता है। अगर गायें खडी हों तो वर्षा की संभावना है और बैठी हों तो समझ लो कि मौसम सुहावना होगा।

मुन्ना : लेकिन पिताजी, अगर आधी गायें खडी हों और आधी बैठी हों तो?

ढब्बूजी : तो समझ लो, वर्षा हो भी सकती है और नहीं भी।

चिकित्सा : शरीर विज्ञान नोबेल पुरस्कार

बारुज बेनासिराफ

पुरस्कार वर्ष : 1980
जन्म : 29 अक्तूबर, 1920
मृत्यु : 2 अगस्त, 2011
राष्ट्रीयता : अमरीकी

बारुज बेनासिराफ को ज्यां दासेट तथा जार्ज डी स्नेल के साथ 1980 का नोबेल पुरस्कार दिया गया। इन्होंने रोग प्रतिरोधक प्रणाली के हानिकारक द्रव्यों के प्रति आकर्षण पर आनुवंशिक नियंत्रण के संबंध में अनुसंधान किया।

ज्यां दासेट

पुरस्कार वर्ष : 1980
जन्म : 19 अक्तूबर 1916
मृत्यु : 6 जून 2009
राष्ट्रीयता : फ्रेंच

ज्यां दासेट ने अन्य दो व्यक्तियों के साथ 1980 का नोबेल पुरस्कार प्राप्त किया। इन्होंने ह्यूमन लूकासिट्स एण्टिजन एच एल ए को नियंत्रित करने वाले जीनों का पता लगाया।

जार्ज डी स्नेल

पुरस्कार वर्ष : 1980
जन्म : 19 दिसंबर 1903
मृत्यु : 06 जून 1996
राष्ट्रीयता : अमरीकी

इन्होंने आनुवंशिकता को सुनिश्चित करने वाले कोशिका के उस भाग का पता लगाया जो रोग प्रतिरोधक प्रतिक्रिया को नियमित करता है। इन्हें बारुज बेनासिराफ तथा ज्यां दासेट के साथ भागीदार के रूप में पुरस्कार मिला।

रोजर डब्ल्यू स्पेरी

पुरस्कार वर्ष : 1981
जन्म : 20 अगस्त, 1913
मृत्यु : 17 अप्रैल 1994
राष्ट्रीयता : अमरीकी

इन्होंने इस बात का पता लगाया कि प्रमस्तिष्क का आधा वृत्त कैसे काम करता है। इन्होंने इस बाता का खण्डन किया कि मस्तिष्क का विशिष्ट आधा भाग दूसरे आधे भाग से अधिक प्रभुत्व वाला है या दूसरे से अधिक महत्व का है। इसीलिए इन्हें पुरस्कृत किया गया।

डेविड एच हुबल

पुरस्कार वर्ष : 1981
जन्म : 27 फरवरी 1926
मृत्यु : 22 सितंबर, 2013
राष्ट्रीयता : अमरीकी

इन्होंने यह दर्शाने का महत्वपूर्ण कार्य किया कि मनुष्य कैसे सोचता है और अपनी आंखों से प्राप्त वातावरण के द्वारा सूचना या जानकारी को कैसे संसाधित करता है। इसीलिए इन्हें पुरस्कार प्राप्त हुआ।

टॉर्स्टन एन वीज़ल

पुरस्कार वर्ष : 1981
जन्म : 03 जून, 1924
राष्ट्रीयता : स्वीडिश

इन्होंने आंखों द्वारा प्राप्त जानकारी को मस्तिष्क द्वारा संसाधित करने की क्रिया का विवरण उपस्थित किया। इन्हें डेविड एच हुबल और रोजर स्पेरी के साथ नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ।

कोरोना का कहर